पेज 04 में...
शक्ति,संयम और सूझबूझ ने दिलाई विजय

साप्ताहिक
शहर सत्ता

RNI TITLE CODE - CHHHIN17596

सोमवार, 12 मई से 18 मई 2025

हम दिखाएंगे आईना...

पेज 12 में...
रायपुर दूरदर्शन केंद्र का हाल बेहाल...

वर्ष : 01 अंक : 10 पृष्ठ : 12 मूल्य : 5 रुपए www.shaharsatta.com

पेज 10 हुनर को शिनाख्त और कला को पहचान देता...

सूबाई सियासत में भाजपा और कांग्रेस के असंतुष्टों के बीच पक रही सत्ता की खिचड़ी

सियासी देग में चढ़ी सत्ता की खिचड़ी

मुख्य संवाददाता/प्रदीप चंद्रवंशी
मोबाईल नंबर 7000681023

सियासत यानि ताकत, रईसियत और खुद मुख्त्यारी का नशा। जिसे इसकी लत लग जाये तो वह इसको हासिल करने सारी हदें भी पार कर सकता है। तुर्रा यह कि सुबाई सियासत से बेदखली,पार्टी की अनदेखी, बढ़ती उम्र में सिमटती सियासत से ख़ौफ़ज़दा सियासतदान सत्ता हासिल करने बेक़रार हो जाता है। कुछ ऐसे ही हालात हैं छत्तीसगढ़ प्रदेश की दो बड़ी सियासी पार्टी के लीडरों के। एक वक्त था जब छत्तीसगढ़ की राजनीति बहुत ही ठहरी, ठंडी सी होती थी। फिर यहां कि ढर्रे वाली राजनीति में जोगी राज का प्रभाव पड़ते ही तोड़फोड़, खरीद-फरोख्त का ऐसा रंग चढ़ा कि इसमें रंगने के लिए दो सियासी तबकों के बड़े नेता लॉबिंग भी कर सकते हैं। वैसे भी सत्ता पक्ष और विपक्ष के बीच सिर्फ 10 माननीयों के आंकड़ें का फर्क है। सत्ता, सिंहासन और उम्र के आखरी पड़ाव में ऊंचे ओहदे की ललक दलबदल से लेकर तख्ता पलट ही नहीं सियासी सौदेबाजी का खतरा बन सकती है।

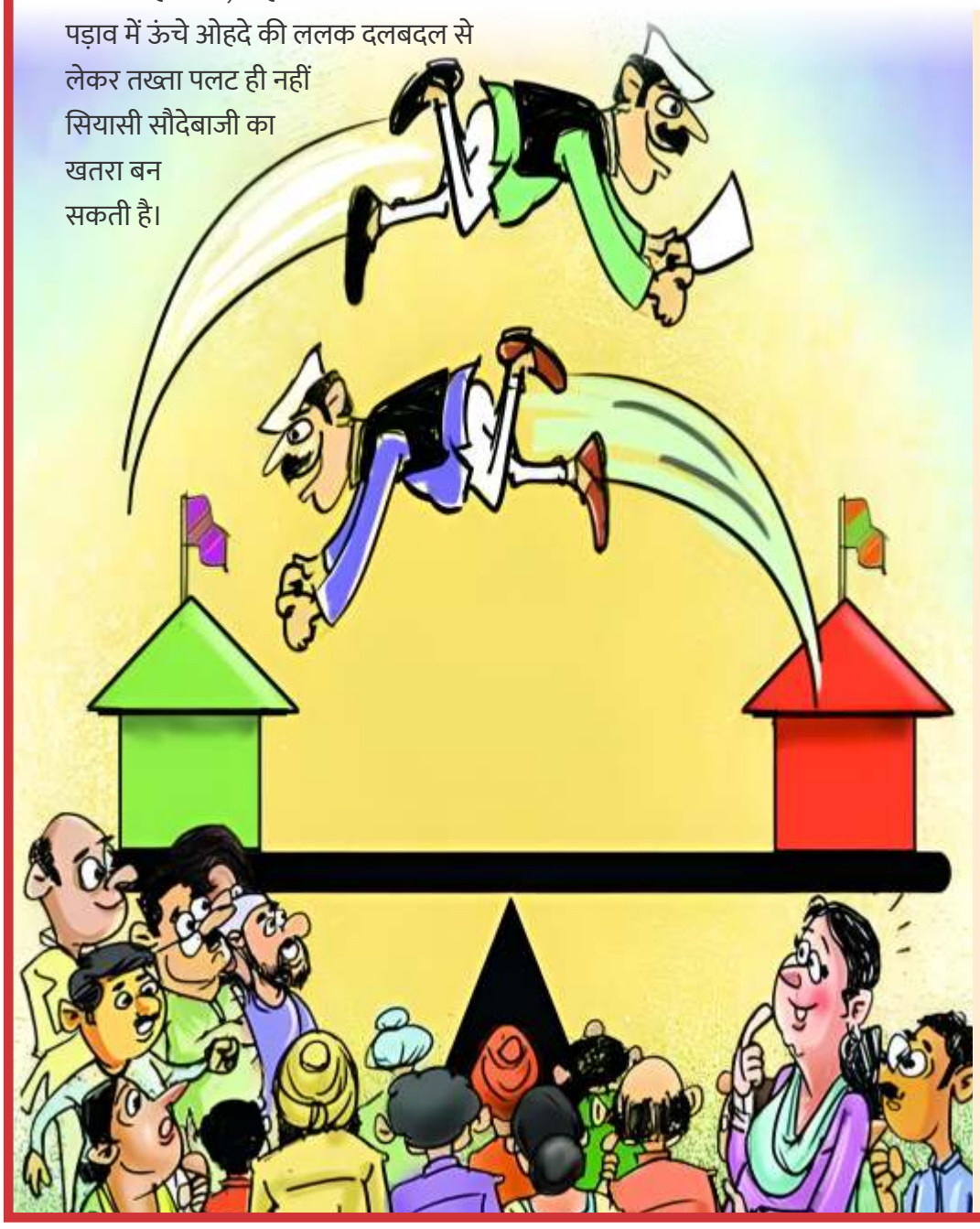

कांग्रेस से ज्यादा भाजपा में वरिष्ठ नेता विधायक खफा

- सिमटती सियासत, बढ़ती उम्र बनेगी दलबदल की वजह
- भाजपा में दमदार नेता अनदेखी से आहत, हो गए सक्रीय

शहर सत्ता/रायपुर। राज्य निर्माण के बाद से ही छत्तीसगढ़ की सियासी रफ़्तार एक ढर्रे पर ही रही है। भाजपा के पास 54 तो कांग्रेस के पास 35 विधायक हैं। 1 विधायक तुलेश्वर हीरासिंह मरकाम गोंडवाना गणतंत्र पार्टी से है। छत्तीसगढ़ के प्रथम मुख्यमंत्री स्वर्गीय अजीत प्रमोद जोगी सत्ता में रहते हुए भी भाजपा से हार गए थे। सत्ता बदली तो सियासत के आलीम-फ़ाज़िल अजीत जोगी ने वो सारे शटरांग किये जिससे सत्ता, सिंहासन पर उनकी पकड़ बनी रहे। विधायकों का दलबदल, खरीद-फरोख्त उनके ही शासनकाल का अनूठा किस्सा आज भी सभी के ज़ेहन में है। वैसा ही कुछ सियासी लालसा, सत्ता की ललक और पूरा जीवन पार्टी को समर्पित करने वाले नेता अनदेखी के चलते कर सकते हैं।

भाजपा की तुलना में फ़िलहाल असंतुष्ट नेताओं की तादात कांग्रेस में कम है। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष बनने के लिए हालांकि चंद वरिष्ठों की लॉबी सक्रीय है। लेकिन धनबल, बाहुबल और सियासी महारत हासिल एक के नाम की नोटशीट चल चुकी है। पीसीसी में बदलाव तय है इसलिए बगावत का खतरा नहीं है। इसके उलट प्रदेश भाजपा संगठन से लेकर अपनी ही सरकार की अनदेखी से खफा लोगों की लम्बी फेहरिस्त है। इसमें दिग्गज पार्टी लीडरों में विधायक-मंत्री से सांसद बना दिए गए बृजमोहन अग्रवाल, पूर्व मंत्री एवं विधायक अजय चंद्राकर, अमर अग्रवाल, राजेश मूणत, ननकी राम कंवर समेत दर्जनभर विधायक समेत एक आदिवासी वर्ग का मंत्री भी संगठन के साथ साथ मुख्यमंत्री से खफा-खफा हैं।

देखा जाये तो तोड़फोड़ या दलबदल के लिए उम्मीद से ज्यादा धनबल और असंतोष नेता काफी होते हैं। प्रदेश में लंबे समय तक 5 साल में 50 से 55 करोड़ के बजट वाले विभाग के मंत्री रहे नाराज नेता अब महज 30 करोड़ की राशि में सिमट गए हैं। खैर पैसा तो सेकेंडरी है अनदेखी और अनसुनी से असंतोष में इजाफा हुआ है।

राजनीतिक मंजर में परवान चढ़े छत्तीसगढ़ के सियासतदां अपनी सिमटती सियासत; बढ़ती उम्र की वजह से विपक्षी दल कांग्रेस के चंद दिग्गज विधायकों के साथ गलबहियां कर एक अलग किस्म की राजनीतिक खिचड़ी पका रहे हैं। सियासी देग में पकती राजनीतिक खिचड़ी असल में उपेक्षा के दंश की आग में पक रही है।

कांग्रेस में इनके पास है तोड़फोड़ की बखत

आमतौर पर प्रदेश कांग्रेस के लिडरानों में हर तरह से पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल, पूर्व उपमुख्यमंत्री टीएस सिंहदेव के बाद पूर्व मंत्री शिव डहरिया, अमरजीत भगत के अलावा मोहम्मद अकबर का नाम आता है। इनमे से फ़िलहाल बेख़ौफ़ सुविधा संपन्न लेकिन साफगोई राजनेता बघेल और सिंहदेव ही हैं। दोनों अगर चाहें तो भाजपा की अंतरकलह और नाराज नेताओं से गलबहियां कर कांग्रेस को सूबाई सियासत में फिर स्थापित कर सकते हैं। लेकिन भूपेश बघेल फ़िलहाल केंद्रीय एजेंसियां की जांच के दायरे में है और उनके लिए सियासी तोड़फोड़ घातक साबित हो सकती है। परंतु टीएस सिंहदेव अब भी इस तरह के दबाव से अछूते हैं। भाजपा में भी उम्रदराज नेताओं से सिंहदेव का बेहतर राफ्ता भी है। अकबर और शिव डहरिया भाजपा के नाराज धड़े से सियासी तोलमोल कर सकते हैं।

भाजपा में इन नेताओं के पास है सियासी माद्दा

राज्य निर्माण से पहले से सूबाई सियासत के सबसे लोकप्रिय और सत्ता पक्ष से लेकर विपक्ष ही नहीं अन्य क्षेत्रीय दलों के बीच मान्य नेताओं में बृजमोहन अग्रवाल ही ऐसा नाम है जिनके लिए कुछ भी असंभव नहीं। अगर बृजमोहन ठान लें तो उनके लिए 15 विधायक जुगाड़ना या सत्ता परिवर्तन करवाना मुश्किल नहीं होगा। भाजपा के दूसरे नेताओं में संसदीय कार्य प्रणाली को अन्य किसी से ज्यादा अच्छे से समझने वाले नेता हैं अजय चंद्राकर। अजय भले ही बृजमोहन की अपेक्षा धन और संसाधन में कमतर हैं लेकिन इनमें भी सियासी उचड़दलप करने का माद्दा है। वैसे भी नाराज नेताओं की भाजपा में संख्या बढ़ गई है। बताते हैं कि एक आदिवासी मंत्री भी काम नहीं होने से नाराज हैं और खामोश बैठ गए हैं। सूत्रों की मानें तो वो 20 कामों की फाइल भेजते हैं तो सिर्फ 2 या 3 ही मंजूर होती है। अमर अग्रवाल भी बड़ा नाम हैं लेकिन वो फैसला लेने में सकुचाते हैं। राजेश मूणत स्वीकार्य नेता तो हैं लेकिन तोड़फोड़ नहीं कर सकते हां नाराजगी उनके अंदर भी है। ननकी राम कंवर आदिवासी नेता हैं और उम्रदराजी के साथ बेबाक भी इसलिए पार्टी नेताओं, मंत्रियों और उनके विभाग का राजफाश करके ही अपनी अच्छे नेता होने की भूमिका बखूबी निभा रहे हैं।

कांग्रेस में इनके पास है तोड़फोड़ की बखत

आमतौर पर प्रदेश कांग्रेस के लिडरानों में हर तरह से पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल, पूर्व उपमुख्यमंत्री टीएस सिंहदेव के बाद पूर्व मंत्री शिव डहरिया, अमरजीत भगत के अलावा मोहम्मद अकबर का नाम आता है। इनमे से फ़िलहाल बेख़ौफ़ सुविधा संपन्न लेकिन साफगोई राजनेता बघेल और सिंहदेव ही हैं। दोनों अगर चाहें तो भाजपा की अंतरकलह और नाराज नेताओं से गलबहियां कर कांग्रेस को सूबाई सियासत में फिर स्थापित कर सकते हैं। लेकिन भूपेश बघेल फ़िलहाल केंद्रीय एजेंसियां की जांच के दायरे में है और उनके लिए सियासी तोड़फोड़ घातक साबित हो सकती है। परंतु टीएस सिंहदेव अब भी इस तरह के दबाव से अछूते हैं। भाजपा में भी उम्रदराज नेताओं से सिंहदेव का बेहतर राफ्ता भी है। अकबर और शिव डहरिया भाजपा के नाराज धड़े से सियासी तोलमोल कर सकते हैं।

भाजपा में इन नेताओं के पास है सियासी माद्दा

राज्य निर्माण से पहले से सूबाई सियासत के सबसे लोकप्रिय और सत्ता पक्ष से लेकर विपक्ष ही नहीं अन्य क्षेत्रीय दलों के बीच मान्य नेताओं में बृजमोहन अग्रवाल ही ऐसा नाम है जिनके लिए कुछ भी असंभव नहीं। अगर बृजमोहन ठान लें तो उनके लिए 15 विधायक जुगाड़ना या सत्ता परिवर्तन करवाना मुश्किल नहीं होगा। भाजपा के दूसरे नेताओं में संसदीय कार्य प्रणाली को अन्य किसी से ज्यादा अच्छे से समझने वाले नेता हैं अजय चंद्राकर। अजय भले ही बृजमोहन की अपेक्षा धन और संसाधन में कमतर हैं लेकिन इनमें भी सियासी उचड़दलप करने का माद्दा है। वैसे भी नाराज नेताओं की भाजपा में संख्या बढ़ गई है। बताते हैं कि एक आदि वासी मंत्री भी काम नहीं होने से नाराज हैं और खामोश बैठ गए हैं। सूत्रों की मानें तो वो 20 कामों की फाइल भेजते हैं तो सिर्फ 2 या 3 ही मंजूर होती है। अमर अग्रवाल भी बड़ा नाम हैं लेकिन वो फैसला लेने में सकुचाते हैं। राजेश मूणत स्वीकार्य नेता तो हैं लेकिन तोड़फोड़ नहीं कर सकते हां नाराजगी उनके अंदर भी है। ननकी राम कंवर आदिवासी नेता हैं और उम्रदराजी के साथ बेबाक भी इसलिए पार्टी नेताओं, मंत्रियों और उनके विभाग का राजफाश करके ही अपनी अच्छे नेता होने की भूमिका बखूबी निभा रहे हैं।

ऐसा हुआ तो बिखराव तय

1. मुख्यमंत्री और सत्ता में अहम् पद का ऑफर मिले तो
2. सियासी चढ़ावे और खरीद-फरोख्त के बड़े आंकड़े मिले तो
3. भविष्य में पार्टी टिकट नहीं मिलने की आशंका से हुआ तो
4. वरिष्ठों, अनुभवियों की अनदेखी और उनके काम में अड़ंगा
5. ढलती उम्र में बढती राजनीतिक महत्वाकांक्षा भी बनेगी वजह

खफा खफा से लगते हैं माननीय

धरमलाल कौशिक

रामविचार नेताम

रेणुका सिंह

अजय चंद्राकर

लता उसेंडी

गुरु खुशवंत साहेब

बृजमोहन अग्रवाल

भैयालाल राजवाड़े

पुन्नु लाल मोहले

राजेश मूणत

उद्धेश्वरी पैकरा

सम्पत अग्रवाल

दीपेश साहू

ललित चंद्राकर

नीलकंठ टेकाम

सुनील सोनी

निजाम बदलने के लिए चाहिए एक तिहाई

अगर उपेक्षा की आग में पकती सियासी खिचड़ी समय रहते पाक गई तो कांग्रेस को एक तिहाई बहुमत चाहिए होगा। सीधे शब्दों में कहें तो साम, दाम और भेद से नाराज खेमे को 15 से ज्यादा विधायकों का बंदोबस्त करना होगा। जरुरत तो 15 की है पर एक-दो अगर इधर-उधर हो गए तब के लिए आमतौर पर ऐसी तैयारी सियासी दाल करते ही हैं। पार्टी छोड़कर इस दुस्साहस के लिए रजामंद होने वालों का पारितोषक भी इतना होना चाहिए जितना वो विधायकी रहते तक नहीं कमा पाएं। हालांकि सूबाई सियासी गलियारे में बदलाव की यह सुनगुन कमोबेश काम ही लोगों तक है। सवाल यह उठता है कि बिखरते वरिष्ठों को समेटने के लिए अब सत्ता कितनी बाख़बर होगी यह देखना हैं।

भारत में राजनीतिक दलबदल कानून

विभाजन की कोई मान्यता नही

91वें संवैधानिक संशोधन अधिनियम 2004 के कारण दल-बदल विरोधी कानून ने दल-बदल विरोधी शासन को एक अपवाद बनाया। हालाँकि यह संशोधन किसी पार्टी में 'विभाजन' को मान्यता नहीं देता है बल्कि इसके बजाय 'विलय' को मान्यता देता है।

केवल सामूहिक दल-बदल की अनुमति:

यह सामूहिक दल-बदल (एक साथ कई सदस्यों द्वारा दल परिवर्तन) की अनुमति देता है, लेकिन व्यक्तिगत दल-बदल (बारी-बारी से या एक-एक करके सदस्यों द्वारा दल परिवर्तन) की अनुमति नहीं देता। अतः इसमें निहित खामियों को दूर करने के लिये संशोधन की आवश्यकता है। उन्होंने चिंता जताई कि यदि कोई राजनेता किसी पार्टी को छोड़ता है, तो वह ऐसा कर सकता है, लेकिन उस अवधि के दौरान उसे नई पार्टी में कोई पद नहीं दिया जाना चाहिये।

दल-बदल विरोधी कानून की चुनौतियाँ

कानून का पैराग्राफ 4:

दल-बदल विरोधी कानून के पैराग्राफ 4 में कहा गया है कि यदि कोई राजनीतिक दल किसी अन्य दल में विलय करता है, तो उसके सदस्य अपनी सीटें नहीं खोएंगे। लेकिन इस विलय के लिये सदन में उस पार्टी के पास कम-से-कम दो-तिहाई सदस्यों का समर्थन होना ज़रूरी है। कानून यह नहीं बताता कि विलय करने वाली पार्टी का राष्ट्रीय या क्षेत्रीय स्तर पर आधार है या नहीं।

दलबदल का राजनीतिक व्यवस्था पर प्रभाव:

चुनावी जनादेश का उल्लंघन:

जो विधायक एक पार्टी के लिये चुने जाते हैं और फिर मंत्री पद या वित्तीय लाभ के प्रलोभन के कारण दूसरी पार्टी में जाना अधिक सुविधाजनक समझते हैं तथा पार्टी बदल लेते हैं, इसे दल-बदल के रूप में जाना जाता है, यह चुनावी जनादेश का उल्लंघन माना जाता है।

सरकार के सामान्य कामकाज़ पर प्रभाव:

कुख्यात "आया राम, गया राम" नारा 1960 के दशक में विधायकों द्वारा लगातार दल-बदल की पृष्ठभूमि में गढ़ा गया था।
दल-बदल के कारण सरकार में अस्थिरता की स्थिति उत्पन्न होती है और प्रशासन प्रभावित होता है।

हॉर्स ट्रेडिंग को बढ़ावा:

दल-बदल विधायकों की खरीद-फरोख्त/हॉर्स ट्रेडिंग को बढ़ावा देता है जो स्पष्ट रूप से लोकतांत्रिक व्यवस्था के जनादेश के खिलाफ है।

दल-बदल का आधार:

- **स्वैच्छिक त्याग:** यदि कोई निर्वाचित सदस्य स्वेच्छा से किसी राजनीतिक दल की सदस्यता छोड़ना चाहता है।
- **निर्देशों का उल्लंघन:** यदि कोई निर्वाचित सदस्य अपने राजनीतिक दल अथवा ऐसा करने के लिये अधिकृत किसी भी व्यक्ति द्वारा पूर्व अनुमोदन के बिना जारी किये गए किसी आदेश के विपरीत ऐसे सदन में मतदान करता है अथवा मतदान से अनुपस्थित रहता है।
- **निर्वाचित सदस्य:** यदि कोई स्वतंत्र रूप से निर्वाचित सदस्य किसी राजनीतिक दल में शामिल होता है।
- **मनोनीत सदस्य:** यदि कोई नामांकित सदस्य छह महीने की समाप्ति के बाद किसी राजनीतिक दल में शामिल होता है।

दलबदल एक नजर

- 1967 में हरियाणा के विधायक गया लाल ने एक दिन में तीन बार पार्टी बदली
- तभी से राजनीति में आया राम गया राम की कहावत मशहूर हो गई
- मध्य प्रदेश और कर्नाटक की राजनीति में जो हुआ था वह अपने आप में उदहारण है
- दल-बदल को रोकने के लिए राजीव गांधी सरकार 1985 में दल-बदल कानून लेकर आई
- किसी पार्टी के दो तिहाई विधायक एक साथ दल-बदल कर लेते हैं तो उनके ऊपर कानून लागु नहीं

इंवेस्टीगेटिव्ह रिपोर्टिंग....

एसएसपी ऑफिस और सरकारी बंगले को तरसते 'कप्तान'

अस्थाई पुलिस अधीक्षक कार्यालय में राज्यसभा सांसद का कब्जा
एसएसपी रायपुर को आवंटित शासकीय आवास में पूर्व DGP अवस्थी

विकास यादव/ विशेष संवाददाता

जब रसूखदार ही सरकारी भवन में बेजा कब्जा करके बैठ जाएं तो बाहुबलियों और भू-माफियाओं को कौन रोकेगा। चौंकाने वाली बात यह है कि राजधानी रायपुर के पुलिस कप्तान के अस्थाई आवंटित दफ्तर और आवास की पजेशन उन्हें नहीं मिली है। रायपुर एसएसपी कार्यालय को अस्थाई तौर पर जो बंगला अलॉट किया गया था उसमें बीजेपी के राज्यसभा सांसद देवेंद्र प्रताप सिंह देव काबिज हैं और कप्तान को आवंटित शासकीय आवास पूर्व डीजीपी ने खली नहीं किया है।

शहर सत्ता। रायपुर कलेक्टोरेट परिसर में कलेक्टर, एसपी समेत अन्य विभाग के लिए कम्पोजिट बिल्डिंग बनाने का प्लान है। इसके लिए टेंडर भी हो चुका है और काम जारी है। बिल्डिंग बनाने के लिए एसएसपी कार्यालय को खाली किया जाना है, इसलिए सिविल लाइन के बंगले को आवंटित किया गया है। इसके साथ ही एसएसपी रायपुर को भी शासकीय बंगला आवंटित किया गया है। संभावित अस्थाई एसएसपी कार्यालय सिविल लाइन के बस्तरबाड़ा के ठीक बाजू ही पूर्व डीजीपी डीएम अवस्थी का बांग्ला है। उनके द्वारा आवास खली किया जाना है। इसी बंगले में एसएसपी रायपुर डॉ लाल उमेद सिंह रहेंगे।

बता दें कि फ़िलहाल एसएसपी सिंह अभी अपने निजी निवास में ही रह रहे हैं। जबकि पूर्व डीजीपी दुर्गेश माधव अवस्थी खुद के धरमपुरा स्थित निवास में शिफ्टिंग कर रहे हैं। जानकारी के मुताबिक अभी भी पूर्व डीजीपी का पूरा सामान सरकारी आवास से गया नहीं है और श्री अवस्थी भी यहीं रह रहे हैं।

बंगले को लेकर मची है खींचतान

छत्तीसगढ़ की राजधानी रायपुर में सरकारी बंगले को लेकर फिर खींचतान देखी जा रही है। बीजेपी के राज्यसभा सांसद देवेंद्र प्रताप सिंह देव ने सिविल लाइन के बस्तरबाड़ा पर अपने नाम की एक दो नहीं बल्कि पांच नेमप्लेट लगा दी है। हालांकि गृह विभाग ने यह बंगला एसएसपी कार्यालय के लिए आवंटित किया है। गृह विभाग ने इस संबंध में 30 जनवरी को आदेश जारी किया था, लेकिन उसके पहले ही बीजेपी के राज्यसभा सांसद ने आदेश को नकारते हुए बंगले पर कब्जा जमा लिया है। इसी तरह एसएसपी को अलॉट शासकीय आवास भी अब तक रिक्त नहीं किया गया है।

कांग्रेस कमेटी के प्रवक्ता विकास तिवारी का तंज

कांग्रेस का कहना है कि सरकारी जमीन और सम्पत्ति पर अवैध कब्जा के नाम से विख्यात साय सरकार और भाजपा नेताओं ने अब सीधे रायपुर पुलिस कप्तान के आधिकारिक ऑफिस पर ही कब्जा कर लिया है। भाजपा के राज्यसभा सांसद के अवैध कब्जे से रायपुर पुलिस कप्तान खुद परेशान हैं तो वो कैसे आम जानता को न्याय दिलवायेंगे। राजधानी रायपुर में लगातार अपराध बढ़ रहा है और अब पुलिस कप्तान के ऑफिस में कब्जा होना बेहद शर्मनाक है। गृहमंत्री विजय शर्मा स्पष्ट करें कि उनके ही निर्देश पर ही राज्यसभा सांसद ने रायपुर पुलिस कप्तान के ऑफिस में कब्जा किया है। यदि पुलिस कप्तान के ऑफिस में राज्यसभा सांसद निवास करेंगे तो क्या पुलिस कप्तान अपना ऑफिस रोड पर लगायेंगे?

क्या अफसरों के पूर्वाग्रह का शिकार हो गए TI से SI पदावनत कलीम खान?

IG संजीव शुक्ला ने TI कलीम खान को किया पदावनत

शहर सत्ता/रायपुर/बिलासपुर। महकमे के लिए राजधानी रायपुर से लेकर विभिन्न पुलिस जिलों में कई बेहतरीन कार्य करने वाले कलीम खान को आखिर इतनी शर्मनाक सजा क्यों मिली यह मातहतों की जुबान में है। रायपुर क्राइम ब्रांच से लेकर अन्य पदस्थापना काल में अपराध और अपराधियों की धरपकड़ करने वाले कलीम खान को आज उनका ही महकमा दोषी मानता है। बिलासपुर आईजी संजीव शुक्ला ने एक आरोपी की पत्नी की शिकायत को सहीं मानते हुए उन्हें निरीक्षक से उपनिरीक्षक पदावनत की सजा दी है।

यौन शोषण, वसूली के आरोप के बाद बनाया गया TI से SI

हालांकि यह सजा एक साल के लिए प्रभावी होगी लेकिन महज शिकायतों और जिस अपराधी को कलीम खान ने पकड़ा उसी की पत्नी की शिकायत पर आला अफसरों ने 4 साल बाद दोषी मानते हुए सजा सुना दी। महकमे में अब पूरी कार्रवाई और पर्याप्त सबूत नहीं होने के बाद भी यूं किसी ऊर्जावान निरीक्षक पर कार्रवाई करने को लेकर अधिकारीयों के पूर्वाग्रह का शिकार होना मान रहे हैं। तत्संबंध में जब कलीम खान से फोन पर संपर्क किया गया तो वे फ़िलहाल कुछ कहने से बचते रहे। हालांकि उन्होंने अपने ऊपर लगे सभी आरोपों को सिरे से ख़ारिज किया है।

टीआई कलीम खान को धोखाधड़ी के एक आरोपी को गिरफ्तार नहीं करने और केस कमजोर करने के एवज में पैसे मांगने और उसकी पत्नी से यौन शोषण के आरोप में डिमोशन कर दिया गया है। चार साल पुरानी शिकायत पर जांच के बाद बिलासपुर रेंज आईजी संजीव शुक्ला के द्वारा टीआई कलीम खान को पदावनत कर एक साल के लिए एसआई बना दिया गया है। कलीम खान वर्तमान में रेंज साइबर थाने अंबिकापुर में पदस्थ हैं।

एसपी प्रशांत अग्रवाल के कार्यकाल के दौरान आरोपी पकड़ने जाने और रुपयों की मांग तथा यौन शोषण की शिकायत अगले एसपी दीपक झा की पदस्थापना के दौरान हुई थी। शिकायत मिलने पर एसपी दीपक झा ने डीएसपी स्तर के अधिकारी से मामले की प्रारंभिक जांच करवाई। प्रारंभिक जांच (पीई) में मामला प्रमाणित हुआ। इस बीच एसपी दीपक झा का भी तबादला हो गया। दीपक झा के तबादले के बाद अगली बिलासपुर एसपी पारुल माथुर ने प्रारंभिक जांच प्रमाणित होने के चलते विभागीय जांच के आदेश दिए थे। विभागीय जांच पर मामला प्रमाणित हो गया।

मुख्य निर्वाचन आयुक्त ने कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ इंडिया के प्रतिनिधिमंडल से की मुलाकात

रायपुर। मुख्य निर्वाचन आयुक्त श्री ज्ञानेश कुमार तथा निर्वाचन आयुक्त डॉ. सुखबीर सिंह संधू एवं डॉ. विवेक जोशी ने आज निर्वाचन सदन में कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ इंडिया (मार्क्सवादी) के महासचिव श्री एम. ए. बेबी के नेतृत्व में आए प्रतिनिधिमंडल से मुलाकात की। यह बैठक विभिन्न राष्ट्रीय एवं राज्य स्तरीय राजनीतिक दलों के अध्यक्षों से हो रही चर्चाओं की श्रृंखला का हिस्सा है।

इन संवादों का उद्देश्य लंबे समय से महसूस की जा रही रचनात्मक चर्चाओं की आवश्यकता को पूरा करना है, जिससे राष्ट्रीय और राज्य स्तरीय पार्टी अध्यक्ष आयोग के साथ सीधे अपने सुझावों और चिंताओं को साझा कर सकें। यह पहल आयोग के व्यापक दृष्टिकोण के अनुरूप है, जिसका उद्देश्य सभी हितधारकों के साथ मिलकर वर्तमान कानूनी ढांचे के अंतर्गत चुनावी प्रक्रिया को और अधिक मजबूत बनाना है। इससे पहले, आयोग ने बहुजन समाज पार्टी (बीएसपी) के अध्यक्ष कुमारी मायावती के नेतृत्व में 06 मई 2025 को तथा भारतीय जनता पार्टी (बीजेपी) के अध्यक्ष श्री जगत प्रकाश नड्डा के नेतृत्व में 08 मई 2025 को मुलाकात की थी। अब तक कुल 4,719 सर्वदलीय बैठकें आयोजित की जा चुकी हैं, जिनमें 40 बैठकें मुख्य निर्वाचन पदाधिकारियों (सीईओ) द्वारा, 800 जिला निर्वाचन अधिकारियों (डीईओ) द्वारा और 3,879 बैठकें निर्वाचक रजिस्ट्रीकरण अधिकारियों द्वारा आयोजित की गईं, जिनमें 28,000 से अधिक विभिन्न राजनीतिक दलों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

साप्ताहिक शहर सत्ता

एक रहेंगे तो नेक रहेंगे!

शक्ति,संयम और सूझबूझ ने दिलाई विजय

प्रो.संजय द्विवेदी

प्रो.संजय द्विवेदी

भारतीय सैन्य शक्ति, राजनीतिक नेतृत्व के शक्ति, संयम और सूझबूझ से बहुत कम समय में भारत ने वह हासिल कर लिया,जिस पर समूचा भारत मुस्करा रहा है। पहलगाम हमले से पैदा हुई बेबसी, आर्तनाद से मर्माहत हुए राष्ट्र ने जवाबी कार्रवाई से राहत की सांस ली है। अब जबकि युद्ध विराम हो चुका है तो संतोष करना चाहिए कि भारत युद्ध को आतुर देश नहीं है, बल्कि हम आतंकवाद के विरुद्ध अपनी जंग के लिए प्रतिबद्ध हैं।

पिछले कुछ दिनों में जैसे हालात बन गए थे, उससे साफ लग रहा कि अब भारत एक ऐसे देश के रूप में उभरा है,जो अपने लोगों का खून बहते नहीं देख सकता। भारतीय बलों की सटीक कार्रवाई ने आतंकवादियों के न सिर्फ ठिकाने उड़ा दिए बल्कि सौ के करीब आतंकियों को समाप्त कर दिया है। भारत का यह संकल्प बहुत प्रखर है और दूरगामी है, जिसमें यह कहा गया है कि भविष्य में होने वाली हर आतंकी गतिविधि को युद्ध माना जाएगा।

विश्व मंच पर आतंक के विरुद्ध भारत:

भारत दुनिया का पहला ऐसा देश है ,जिसने एक परमाणु शक्ति संपन्न देश पर कार्रवाई की है। आज भारत आतंकवाद के विरुद्ध अपनी प्रतिबद्धता से विश्व मंच पर आदर पा रहा है। दुनिया के तमाम देशों ने भारत का न सिर्फ साथ दिया, बल्कि पाकिस्तान को लताड़ भी लगाई। पाकिस्तान की सेना और उसके राजनीतिक प्रतिष्ठान की बदनीयत दुनिया के सामने आ चुकी है। आर्थिक प्रतिबंध, आयात -निर्यात प्रतिबंध, सैन्य कार्रवाई, सिंधु जल समझौता तोड़कर, पाकिस्तानी नागरिकों को भारत से निकालकर ,पांच एयरबेस नष्ट कर भारत की सरकार ने अपने इरादे जाहिर कर दिए। पाकिस्तान के मंत्रियों, सांसदों की परमाणु धमकियों के बाद भी भारत ने संयम रखकर अपने लक्ष्य हासिल किए। इसके साथ ही इस क्षेत्र को युद्ध में झोंकने से भी बचाया। अंतिम समय तक निरंतर संवाद बनाए रखते हुए भारत की सरकार ने अपार सूझबूझ का परिचय दिया।

चार दिनों में घुटनों पर पाकिस्तान:

पाकिस्तान ने सिर्फ चार दिनों में घुटनों पर आ गया बल्कि उसने बातचीत के तमाम चैनल खोले। आतंकवाद के विरुद्ध भारतीय प्रतिबद्धता का प्रकटीकरण तो हुआ है लेकिन पाकिस्तान भरोसे के लायक नहीं है। पाकिस्तान के राजनीतिक नेतृत्व और फौज के बीच बहुत गहरी खाइयां हैं। सच तो यह है कि पाकिस्तान सत्ता तंत्र को यह भरोसा नहीं था कि भारत आपरेशन सिंदूर जैसा कदम उठाकर कार्रवाई करेगा।

युद्धोन्माद नहीं संयम

भारत की सरकार ने संवाद,संयम और प्रतिकार तीनों मोर्चे पर एक साथ काम किया। पाकिस्तानी नागरिकों के विरुद्ध नहीं, आतंकवाद के विरुद्ध अपनी प्रतिबद्धता का साफ इजहार किया। यह जीत इसलिए साधारण नहीं है। यह बड़ी कामयाबी है। भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी कहते रहे हैं कि "यह युद्ध का समय नहीं है।" यह संयम भी भारत को दुनिया में सम्मान दिलाता है। भारत सरकार ने टीवी चैनलों को भी संयम बरतने की सलाहें दीं। सेना आज भी हाई अलर्ट पर है। पुंछ, राजौरी में काफी नुकसान हुआ, यह भी सामने है। पाकिस्तान को एक अवसर और राहत जरूर मिली है। अपने बदहाल आर्थिक हालात से जूझ रहे पाकिस्तान को खुद को संभालना है। आतंकवाद की नर्सरी बन चुके देश को सबक सिखाना जरूरी है। एक अराजक पाकिस्तान दुनिया के लिए खतरा बन चुका है। इसलिए भारत की इस चेतावनी को बहुत खास माना जाना चाहिए कि किसी भी उकसावे, आतंकी कार्रवाई को युद्ध ही माना जाएगा।

पाकिस्तान का बिखराव ही विकल्प

पाकिस्तान का होना सदैव का संकट है। इन टोटकों से वह सुधर जाएगा ऐसा मानना कठिन है। बावजूद इसके तात्कालिक तौर पर राहत जरूर है। किंतु अंततः पाकिस्तान का बिखराव ही संकट का समाधान है। पख़्तून, बलूच, सिंध की चुनौती पाकिस्तान के सामने ही हैं। इसके दो लक्ष्य होने चाहिए एक तो उसे दुनिया से अलग-थलग करना और दूसरा उन्हें ऐसी चोट देना कि पाकिस्तान सेना दुबारा हिमाकत न कर सके। फिलहाल ऐसा होता नहीं दिखता। पाकिस्तान आज भी एक अविश्वसनीय पड़ोसी और आतंकी संगठनों को पालने वाला देश है। बना रहेगा। हाल-फिलहाल तो पाकिस्तान की राजनीतिक शक्तियों ने बैकडोर कूटनीति से अमरीका और सऊदी अरब को आगे कर राहत तो प्राप्त कर ली है। भारत की सुरक्षा चुनौतियां आज भी बहुत कठिन हैं। थोड़ा और इंतजार कीजिए कि पाकिस्तान का रवैया क्या होता है। इतिहास को देखते हुए पाकिस्तान पर बहुत भरोसा करना ठीक नहीं। पाकिस्तान की सैन्य ताकत को ध्वस्त किए बिना शान्ति का सपना बहुत दूर की कौड़ी है।

(लेखक भारतीय जन संचार संस्थान के पूर्व महानिदेशक हैं।)

> पाकिस्तान ने सिर्फ चार दिनों में घुटनों पर आ गया बल्कि उसने बातचीत के तमाम चैनल खोले। आतंकवाद के विरुद्ध भारतीय प्रतिबद्धता का प्रकटीकरण तो हुआ है लेकिन पाकिस्तान भरोसे के लायक नहीं है। पाकिस्तान के राजनीतिक नेतृत्व और फौज के बीच बहुत गहरी खाइयां हैं।

संपादकीय

सुकांत राजपूत

अगला कदम पूर्ण युद्ध...

फ़िलहाल अनजान रोमांच से लबरेज भारत और पाकिस्तान के लोग अगले कदम से बेखबर हैं। बहुतेरों को यह नहीं मालूम कि लिमिटेड वॉर, फुल फ्लेज्ड वॉर यानी 'पूरी तरह से शुरू हो चुकी जंग' में अंतर् क्या है। फ़िलहाल बिजली सप्लाय दुरुस्त है, अन्न भंडार भी भरा है और गाड़ियों के लिए पर्याप्त ईंधन के साथ ही बैंकिंग पोजीशन भी दुश्मन देश से बेहतर है। शायद इसलिए भी भारतियों की पेशानी में कोई चिंता की लकीर नहीं दिखाई दे रही। भले ही तनाव पसंद लोगों को टेरिटोरियल वॉर, रीजनल वॉर, कोअर्सिव वॉर, और नोर्मेटिव वॉर में फर्क नहीं पता।

जंग और ऑपरेशन में फर्क को इन बातों से समझा जा सकता है- जंग यानी एक देश का दूसरे देश पर अटैक करना। जैसे- पूरा इलाका खत्म करना, बड़ी तादाद में बम गिराना, फाइटर जेट्स से लगातार हमला करना। जबकि ऑपरेशन में स्पेसिफिक टारगेट को खत्म किया जाता है। ऑपरेशन सोच-समझकर किया जाता है और देखा जाता है कि कोलैट्रल डैमेज न हो। जबकि जंग में ऐसा नहीं होता।

जंग में सेना के जवानों के साथ-साथ आम लोग भी घायल या मारे जाते हैं। वहीं ऑपरेशन में उसे व्यक्ति या चीज को खत्म किया जाता, जिससे देश को खतरा है। जंग किसी बड़े मकसद के लिए होती है, जबकि ऑपरेशन अपनी सुरक्षा के लिए। जैसे- 1999 में पाकिस्तान ने कारगिल पर कब्जा करने की सोच से जंग शुरू की थी। जबकि भारत के ऑपरेशन सिंदूर का मकसद आतंकवादियों के कैम्प को खत्म कर देश की सुरक्षा करना। जंग के दौरान कई तरह के ऑपरेशन किए जाते हैं, जबकि किसी एक ऑपरेशन की वजह से जंग के हालात बन सकते हैं।

अभी दोनों देशों ने खुलकर जंग का ऐलान नहीं किया, लेकिन दोनों ओर से एक्शन हो रहे हैं। ऐसे में अगर सैन्य कार्रवाइयां बढ़ती हैं, तो कहा जा सकता है कि अब संघर्ष बढ़ रहा है। इस संघर्ष में जब आर्मी, एयरफोर्स और नेवी यानी सेना के तीनों अंग शामिल हो जाती हैं तो इसे फुल फ्लेज्ड वॉर यानी 'पूरी तरह से शुरू हो चुकी जंग' कहा जाता है।

पिछले 17 दिनों में भारत और पाकिस्तान 'एस्केलेशन सीढ़ी' में 4 स्टेप चढ़ चुके हैं। ईश्वर से हम सभी को यह प्रार्थना करनी चाहिए कि पारंपरिक युद्ध से यह हल्के सैन्य कदम और बढ़ते-बढ़ते ये सर्वनाश तक नहीं पहुंच जाये।

युद्ध तनाव : ऋण जोखिम बढ़ेगा

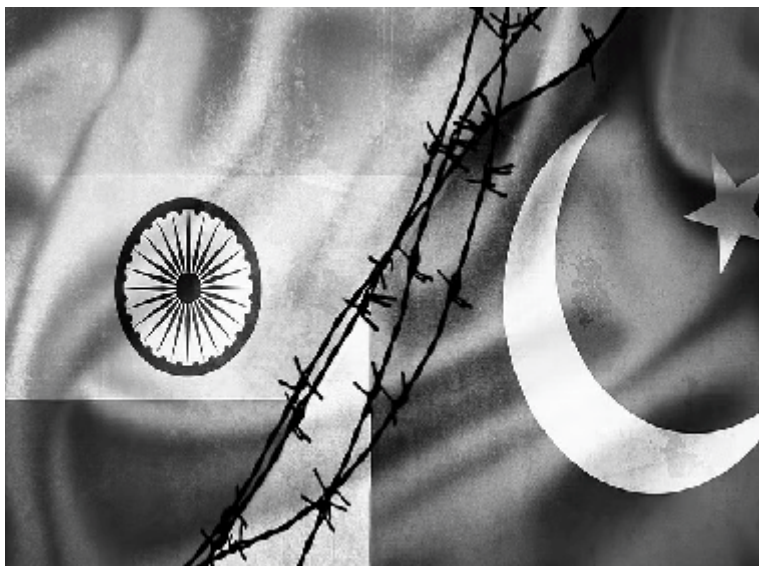

एसएंडपी ग्लोबल रेटिंग्स का कहना है कि भारत और पाकिस्तान के बीच तनाव बढ़ने से दोनों देशों के लिए ऋण जोखिम भी बढ़ेगा। एसएंडपी ने भारत और पाकिस्तान को सकारात्मक परिदृश्य के साथ बीबीबी- और सीसीसी (स्थिर परिदृश्य) रेटिंग दे रखी है। रेटिंग एजेंसी ने कहा कि वर्तमान परिदृश्य में उसे संप्रभु क्रेडिट रेटिंग पर तत्काल कोई प्रभाव नहीं दिखता है।

एसएंडपी ग्लोबल रेटिंग्स ने गुरुवार को कहा कि भारत और पाकिस्तान के बीच तनाव बढ़ने से दोनों देशों के लिए ऋण जोखिम भी बढ़ेगा। एसएंडपी ने भारत और पाकिस्तान को सकारात्मक परिदृश्य के साथ 'बीबीबी-' और 'सीसीसी' (स्थिर परिदृश्य) रेटिंग दे रखी है। रेटिंग एजेंसी ने कहा कि वर्तमान परिदृश्य में उसे संप्रभु क्रेडिट रेटिंग पर तत्काल कोई प्रभाव नहीं दिखता है। अगले दो से तीन सप्ताह तक तनाव के उच्च स्तर पर बने रहने की आशंका है और दोनों पक्षों की ओर से महत्वपूर्ण सैन्य कार्रवाई की जा सकती है। एसएंडपी ग्लोबल रेटिंग्स ने बयान में कहा, 'भारत और पाकिस्तान के बीच शत्रुता शुरू होने से क्षेत्रीय ऋण जोखिम बढ़ गया है, खासकर इसमें शामिल दोनों देशों के लिए। हमारा मूलभूत तर्क यह है कि तीन सैन्य कार्रवाई अस्थायी है, जिससे लंबे समय तक सीमित और छिटपुट टकराव का रास्ता बनेगा।' एसएंडपी ने कहा कि उसका अनुमान है कि भारत मजबूत आर्थिक वृद्धि बनाए रखेगा जिससे क्रमिक राजकोषीय सुधार जारी रह सके। पाकिस्तान सरकार भी अपनी अर्थव्यवस्था की बहाली और राजकाधीय स्थिरता का समर्थन करने पर ध्यान केंद्रित रखेगी। दोनों देशों के पास मौजूदा तनाव को लंबे समय तक जारी रखने का कोई आधार नजर नहीं आता।

रेटिंग एजेंसी ने पिछले सप्ताह अमेरिकी व्यापार नीति पर अनिश्चितता का हवाला देते हुए वित्त वर्ष 2025-26 के लिए भारत के वृद्धि अनुमान को 6.5 प्रतिशत से घटाकर 6.3 प्रतिशत कर दिया था। एसएंडपी ने कहा-फिलहाल उसे संप्रभु क्रेडिट रेटिंग पर तत्काल कोई प्रभाव नहीं दिखता है। भारत मजबूत आर्थिक वृद्धि बनाए रखेगा जिससे क्रमिक राजकोषीय सुधार जारी रह सके।

परिस्थिति नहीं तो मनोस्थिति बदल लें....

एन. रघुरामन

इशिका बाला छत्तीसगढ़ के कांकेर जिले में दसवीं की छात्रा हैं। किसान की इस बेटी ने 99.2% अंक लाकर परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त किया है। इसके लिए न केवल उनकी बुद्धिमत्ता बल्कि उनकी "परिस्थिति' की भी प्रशंसा की जानी चाहिए। वे माओवाद प्रभावित क्षेत्र से आती हैं, जिसकी अपनी समस्याएं हैं, लेकिन सबसे बड़ी क्षति उनके शरीर को पहुंची है। जी हां, इशिका हाल ही में रक्त कैंसर से जंग जीतकर वापस लौटी हैं। इशिका की उपलब्धि उस जिले के लिए उम्मीद की किरण है, जहां महिला साक्षरता दर बमुश्किल 59.6% है।

वे पिछले साल ही दसवीं की परीक्षा में शामिल हो जातीं, लेकिन उनका स्वास्थ्य बहुत खराब था। इलाज की कठिनाइयों के बावजूद इस साल उन्होंने टॉप किया, क्योंकि उन्होंने संकल्प लिया था कि आईएएस बनेंगी। इस सपने ने ही हर बार कमजोरी और दर्द से लड़ने में तब उनकी मदद की, जब उन्हें लगा कि जानलेवा बीमारी उन्हें पीछे धकेल रही है।

एक उल्लेखनीय संयोग यह है कि 12वीं के टॉपर अखिल सेन भी कांकेर से हैं। उन्होंने 98.2% अंक (वाणिज्य में 491/500) प्राप्त किए। उनके पिता समाचार पत्र एजेंसी चलाते हैं, और अखिल भी बोर्ड परीक्षाओं की तैयारी करते हुए हर सुबह अखबार बांटते थे।

उन्होंने कभी नहीं सोचा था कि उनके जीवन में ऐसी ऊंचाइयां आएंगी। वे यही सोचते थे कि पिता के कामकाज में हाथ बंटाएंगे। टॉपर्स की सूची में जगह बनाने वाले 85 छात्रों में से आठ बस्तर संभाग से हैं, जो पिछले 25 वर्षों से माओवादी विद्रोह से जूझ रहा है। और उन सभी ने कभी अपनी परिस्थितियों की परवाह नहीं की थी।

प्रज्ञा जायसवाल भी एक ऐसे परिवेश से आती हैं, जहां महिला साक्षरता कम है। वे सिंगरौली की सराय तहसील के निगारी गांव में रहती हैं, जो कि मध्य प्रदेश के भोपाल से 645 किलोमीटर दूर है। वहां महिला साक्षरता दर बमुश्किल 48.5% है। लेकिन उन्होंने कक्षा 10 की राज्य बोर्ड परीक्षा में पूरे 100% अंक प्राप्त किए। उनके माता-पिता सरकारी शिक्षक हैं और आज उनकी सफलता ने गांव को देश भर में पहचान दिलाई है। दूसरी ओर 76 वर्षीय गोरखनाथ मोरे- जो भारतीय नौसेना से चीफ पेटि ऑफिसर के पद से सेवानिवृत्त हुए थे- ने केवल इसलिए 12वीं की परीक्षा देने का प्रयास किया क्योंकि वे कानून की पढ़ाई करना चाहते थे। उन्होंने 45% अंकों के साथ परीक्षा उत्तीर्ण की, जो लॉ कॉलेज की परीक्षा के लिए जरूरी न्यूनतम अंक हैं। वे 11वीं के बाद ही भारतीय नौसेना में शामिल हो गए थे और अपनी सेवा के वर्षों के दौरान उन्हें अपनी शिक्षा जारी रखने का अवसर नहीं मिला। वे 1997 में नौसेना से सेवानिवृत्त हुए और लीगल टीम के हिस्से के रूप में एक निजी बिल्डर के साथ काम किया।

यहीं कानून में उनकी रुचि पनपी। वकीलों ने लीगल प्रैक्टिस के प्रति उनकी समझ को पहचाना और उनकी प्रशंसा की, जिसके बाद उन्होंने कानून की डिग्री हासिल करने का फैसला किया। लेकिन उस सपने को साकार करने के लिए उन्हें पहले 12वीं कक्षा उत्तीर्ण करनी थी। उन्होंने इस औपचारिकता को पूरा करने के लिए एक स्थानीय स्कूल के संस्थापक रवींद्र भटकर और मोरे की पत्नी- जो स्वयं स्कूल शिक्षिका थीं- की मदद से निजी उम्मीदवार के रूप में पंजीयन किया। भटकर ने उन नए विषयों का अध्ययन करने में उनकी मदद की, जिनके बारे में उन्होंने कभी नहीं सुना था।

लेकिन प्रतिदिन निर्धारित समय में पढ़ाई करने के अपने अनुशासन के चलते उन्हें परीक्षा उत्तीर्ण करने में मदद मिली। अब वे 76 की आयु में इस शैक्षणिक वर्ष से लॉ कॉलेज के छात्र होंगे। मेरा विश्वास करें, मैं व्यक्तिगत रूप से यह उम्मीद करता हूं कि वे कानून की परीक्षा में उत्तीर्ण हो जाएंगे, क्योंकि उनके पास एक संगठन में काम करते हुए वर्षों में अर्जित अनुभव, ज्ञान और विषय में रुचि है। फंडा यह है कि हममें से किसी के भी पास अपनी परिस्थिति को बदलने की सुपर पॉवर नहीं है, लेकिन जीतने के लिए जिस चीज में बदलाव की जरूरत होती है, वो है मनोस्थिति। इसे बदलें और अपने अंदर ग्रोथ देखें। आपको भी "सुपर' टैग मिलेगा, जैसा कि उपरोक्त लोगों को उनकी सफलताओं के लिए मिला।

कोंदा-भैरा के गोठ

पाकिस्तान के जमने बियाए आतंकवादी मनला ठिकाना लगाए बर अभी हमर देश के सेना ह जेन 'आपरेशन सिंदूर' चलावत हावन न जी भैरा तेकर इहाँ के लोगन मन अपन-अपन किसम ले स्वागत करत हें.

-वाह.. ए तो बने बात आय जी कोंदा.. हमर सेना हमर गौरव आय.. देश हित म उठाए एकर कोनो भी कारज के सम्मान तो होना ही चाही.

-सही कहे संगी.. बंगाली समाज म 'सिंदूर खेला' के एक परंपरा हे.. काली माई के भक्ति करत ए परंपरा ल निभाए जाथे.

-हव.. नवरात परब बखत इहाँ के कालीबाड़ी म सिंदूर खेला देखे हावौं.

-हाँ.. ठउका वइसने काली रायपुर के बंगाली समाज के माईलोगिन मन सेना के 'आपरेशन सिंदूर' के सम्मान म फेर खेलिन.

-ए तो सँहराय के लाइक बात आय संगी.. अइसने बिहार राज्य म काली जनम धरे आठ लइका मन के नॉव ल 'सिंदूर' रखे गिस एक झन नोनी घलो कालेच अवतरे हे तेकर नॉव ल 'सिंदरी' रखे गिस.. उँकर मन के सियान मन के कहना हे- सेना के आपरेशन सिंदूर के सम्मान म ए लइका मन के नॉव राखे हावन, त ए मनला बड़े बाढ़े के बाद देश सेवा खातिर सेना म भेजबो घलो.

बुद्ध की सीख - मन अशांत हो तो धैर्य नहीं छोड़ें, मन शांत होने की प्रतिक्षा करें

धैर्य एक मानसिक शक्ति है, जो समय के साथ स्थिति को बेहतर बना सकती है। जिस तरह शांत जल में अपनी परछाई साफ दिखती है, वैसे ही शांत मन में समाधान स्वतः प्रकट होता है। बुरे समय में घबराने की बजाय ठहरना और खुद को संभालना ही बुद्धिमानी है। बुद्ध की यह छोटी सी कथा हमें सिखाती है कि जीवन की सबसे कठिन परिस्थितियां भी धैर्य और शांति से हल की जा सकती हैं। क्योंकि जब मन बैठ जाता है, तब समाधान उभर आता है। कभी-कभी जीवन में हमें ऐसे मोड़ मिलते हैं, जहां रास्ता साफ दिखना बंद हो जाता है। समाधान जो पहले स्पष्ट था, वह धुंधला और उलझा हुआ लगता है। ऐसी स्थिति के लिए गौतम बुद्ध ने अपने शिष्य आनंद को एक घटना के माध्यम से धैर्य का महत्व समझाया था।

गौतम बुद्ध और आनंद एक दिन किसी जंगल से गुजर रहे थे। गर्मी और थकान से परेशान होकर बुद्ध को प्यास लगी। बुद्ध ने आनंद से कहा कि पास ही एक झरना है, वहां से पानी ले आएं। आनंद झरने के पास पहुंचे, लेकिन वहां की स्थिति कुछ और ही थी, एक बैलगाड़ी झरने से होकर निकली थी, जिससे पानी मटमैला और गंदा हो गया था। निराश होकर आनंद लौट आए और बुद्ध को बताया कि पानी पीने योग्य नहीं है।

बुद्ध मुस्कुराए और बोले, "तुम वहां वापस जाओ और कुछ देर किनारे पर बैठ जाओ।" आनंद ने गुरु की बात मानी और झरने के पास जाकर शांत होकर बैठ गए। थोड़ी ही देर में गंदगी नीचे बैठने लगी और पानी साफ दिखने लगा। आनंद ने साफ पानी भरा और बुद्ध के पास लौट आए।

बुद्ध ने बड़े ही शांत स्वर में कहा, "जीवन में भी कई बार ऐसा होता है जब परिस्थितियां इतनी गड़बड़ हो जाती हैं कि हमें कुछ समझ नहीं आता। उस समय अगर हम भी परेशान हो जाएं और प्रतिक्रिया देने लगें तो चीजें और बिगड़ती हैं। लेकिन अगर हम शांत रहें, धैर्य रखें, तो समय के साथ परिस्थितियां साफ होने लगती हैं और हम सही निर्णय ले पाते हैं, सकारात्मक भाव के साथ आगे बढ़ते हैं।"

साप्ताहिक शहर सत्ता

पाकिस्तान ने जिस एयरबेस से लॉन्च की थी फतेह मिसाइल, भारत ने उसी एयरबेस को कर दिया तबाह

भारत और पाकिस्तान के बीच 4 दिन चले सैन्य तनाव के बाद सीजफायर की घोषणा कर दी गई है. हालांकि, इससे पहले भारत के 'ऑपरेशन सिंदूर' के जवाब में पाकिस्तान की ओर से हुए हमले की कोशिश और भारत की कड़ी सैन्य प्रतिक्रिया ने पूरे दक्षिण एशिया को सतर्क कर दिया है. इस बीच शुक्रवार देर रात पाकिस्तान की आर्मी ने बड़ा दावा किया कि भारत ने छह बैलिस्टिक मिसाइलें दागी, जिन्होंने पाकिस्तान के चार प्रमुख एयरबेस को निशाना बनाया.इन मिसाइलों के निशाने पर रावलपिंडी, मुरीद चक्रवाल, शरकोट (शोरकोट) और नूर खान एयरबेस थे, जहां कथित रूप से गंभीर क्षति हुई है. हालांकि भारत की ओर से अभी तक आधिकारिक पुष्टि नहीं हुई है.

पाकिस्तान में घबराहट

22 अप्रैल को जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में हुए आतंकी हमले के बाद भारत ने 'ऑपरेशन सिंदूर' के तहत पाकिस्तान और पाकिस्तान-अधिकृत कश्मीर (PoK) में 9 आतंकी ठिकानों पर सटीक हवाई हमले किए थे. इसके बाद पाकिस्तान की ओर से ड्रोन और मिसाइल हमलों की कोशिश हुई, जिनमें भारत के 26 शहरों को निशाना बनाया गया. भारतीय S-400 एयर डिफेंस सिस्टम और अन्य एयर डिफेंस सिस्टम ने इन हमलों को पूरी तरह से नाकाम किया. फिर भारत ने अपनी सैन्य शक्ति का इस्तेमाल करते हुए जवाबी कार्रवाई में पाकिस्तान के चार वायुसेना अड्डों पर हमला किया.

फतेह-1 मिसाइल का जवाब

पाकिस्तान ने भारत के खिलाफ अपने फतेह-1 बैलिस्टिक मिसाइल सिस्टम के प्रयोग का दावा किया था, जो कि अब पाकिस्तान के लिए सबसे बड़ी भूल साबित हुई. भारत ने इस मिसाइल को नाकाम किया. पाकिस्तान आर्मी का कहना है कि भारत ने जालंधर के आदमपुर एयरबेस से मिसाइलें छोड़ीं और इस हमले के बाद सभी प्रमुख एयरबेस को तत्काल बंद कर दिया गया. इसके चलते दोपहर 12 बजे तक सभी उड़ानों पर रोक लगा दी गई थी. भारतीय रक्षा मंत्रालय की ओर से अभी तक इस पर कोई बयान नहीं आया है, लेकिन सेना की कार्रवाई और सतर्कता यह स्पष्ट कर रही है कि भारत अब आतंक के खिलाफ निर्णायक रुख अपना चुका है. रतीय सेना की अधिकारी सोफिया कुरैशी ने खुलासा किया कि पाकिस्तान जानबूझकर आम नागरिकों की उड़ानों का इस्तेमाल कर रहा था ताकि सैन्य ठिकानों को छिपाया जा सके. यह अंतरराष्ट्रीय नियमों का गंभीर उल्लंघन है और दुनिया के सामने पाकिस्तान की कायराना रणनीति को उजागर करता है. भारत ने इस विषय में कई सबूत भी प्रस्तुत किए हैं।

कश्मीर में स्लीपर सेल मॉड्यूल का भंडाफोड़, 20 जगहों पर छापेमारी

जम्मू-कश्मीर पुलिस की राज्य जांच एजेंसी (एसआईए) ने रविवार (11 मई, 2025) को दक्षिण कश्मीर के चार जिलों अनंतनाग, कुलगाम, शोपियां और पुलवामा में 20 स्थानों पर छापेमारी के बाद स्लीपर सेल मॉड्यूल का भंडाफोड़ करने का दावा किया. दक्षिण कश्मीर में काम कर रहे आतंकी सहयोगियों और ओवर ग्राउंड वर्कर्स (ओजीडब्ल्यू) पर कई सप्ताह तक सावधानीपूर्वक निगरानी रखने के बाद यह कार्रवाई की गई. एसआईए के अधिकारियों के अनुसार तकनीकी खुफिया जानकारी से संकेत मिला था कि कश्मीर में कई स्लीपर सेल पाकिस्तान में बैठे अपने आकाओं के सीधे संपर्क में थे. स्लीपर सेल व्हाट्सएप, टेलीग्राम, सिग्नल आदि मैसेजिंग ऐप के जरिए सुरक्षा बलों और महत्वपूर्ण प्रतिष्ठानों के बारे में संवेदनशील और रणनीतिक जानकारी पहुंचाने में शामिल थे. ये आतंकी सहयोगी लश्कर-ए-तैयबा और जैश-ए-मुहम्मद के आतंकी कमांडरों के इशारे पर ऑनलाइन कट्टरपंथी प्रचार में भी शामिल थे, जो राष्ट्रीय सुरक्षा और अखंडता को प्रभावित कर रहे थे. राज्य जांच एजेंसी (एसआईए) ने रविवार को पी/एस सीआई/एसआईए कश्मीर के मामले एफआईआर संख्या 01/2025 यू/एस 13, 17, 18, 18-बी, 38, 39 यूए(पी) अधिनियम की जांच के संबंध में दक्षिण कश्मीर के सभी जिलों में लगभग 20 स्थानों पर तलाशी ली. छापेमारी के दौरान पर्याप्त मात्रा में आपत्तिजनक सामग्री जब्त की गई है और संदिग्धों को आगे की पूछताछ के लिए हिरासत में लिया गया है.

मैं पुतिन से मिलने के लिए इच्छुक : जेलेंस्की

कीव। यूक्रेन के राष्ट्रपति वोलोदिमिर जेलेंस्की ने सोमवार (12 मई, 2025) को अपने रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन के साथ दोनों देशों के बीच चल रहे संघर्ष को समाप्त करने के लिए चर्चा करने की इच्छा व्यक्त की. यह बयान अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की ओर से यूक्रेन से रूसी राष्ट्रपति पुतिन द्वारा प्रस्तावित वार्ता पर तुरंत सहमत होने के तुरंत बाद आया. यह चर्चा 15 मई को तुर्की में हो सकती है.

जेलेंस्की ने एक्स पर पोस्ट करते हुए लिखा, 'यहां यूक्रेन में, हमें बातचीत में शामिल होने में कोई समस्या नहीं है, हम तैयार हैं. मैं इस गुरुवार 15 मई को तुर्किये में रहूंगा और मुझे उम्मीद है कि पुतिन भी तुर्किये आएंगे. मुझे उम्मीद है कि इस बार पुतिन बहाने नहीं ढूंढेंगे कि वu क्यों नहीं आ सकते. हम बातचीत करने, इस युद्ध को समाप्त करने के लिए तैयार हैं.' इससे पहले रविवार को क्रेमलिन में पत्रकारों को संबोधित करते हुए पुतिन ने कीव अधिकारियों को बिना किसी पूर्व शर्त के सीधी वार्ता फिर से शुरू करने का प्रस्ताव दिया, जिसे यूक्रेन ने 2022 में बाधित कर दिया था. क्रेमलिन के प्रवक्ता दिमित्री पेस्कोव ने कहा कि कीव अधिकारियों के साथ सीधी बातचीत करने का राष्ट्रपति पुतिन का प्रस्ताव यूक्रेनी समस्या का शांतिपूर्ण समाधान खोजना है. यह उनकी मंशा की पुष्टि करता है.

रूसी टीवी चैनल पर पुतिन की पहल पर टिप्पणी करते हुए उन्होंने कहा, 'यह एक बहुत ही गंभीर प्रस्ताव है, जो शांतिपूर्ण समाधान खोजने की वास्तविक मंशा की पुष्टि करता है.' प्रवक्ता ने कहा, 'स्थायी शांति केवल गंभीर वार्ता के माध्यम से ही प्राप्त की जा सकती है, और इन वार्ताओं के लिए तत्परता अब (रूसी) राष्ट्रपति द्वारा दिखाई और प्रदर्शित की गई है.'

ऑपरेशन सिंदूर को इजरायल का समर्थन

तेल अवीव। ऑपरेशन सिंदूर के तहत पाकिस्तान स्थित आतंकी ठिकानों पर भारत की एयरस्ट्राइक का इजरायल ने समर्थन किया है. इजरायल के राजदूत रूवेन अजार ने कहा कि आतंकवादियों को पता होना चाहिए कि निर्दोषों के खिलाफ जघन्य ऐसे जघन्य अपैध करने वालों के लिए बचने की कोई जगह नहीं है. भारत में इजरायल के राजदूत रूवेन अजार ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर लिखा, 'इजरायल भारत के आत्मरक्षा के अधिकार का समर्थन करता है. आतंकवादियों को पता होना चाहिए कि निर्दोषों के खिलाफ उनके जघन्य अपराधों से बचने के लिए कोई जगह नहीं है.' 22 अप्रैल को पहलगाम में हुए आतंकी हमले के 15 दिन बाद भारतीय सेना ने 6 और 7 मई की दरमियानी रात को आतंकियों के खिलाफ सैन्य कार्रवाई की. इस सैन्य कार्रवाई में उन आतंकी कैंपों और लॉजिस्टिक ठिकानों को निशाना बनाया गया, जो पहलगाम हमले के लिए जिम्मेदार आतंकी समूहों से जुड़े थे.

ऑपरेशन सिंदूर के बाद नरम पड़े पाकिस्तान के सुर

इस्लामाबाद। भारत ने पाकिस्तान और पाक अधिकृत कश्मीर (PoK) में एयर स्ट्राइक कर ऑपरेशन सिंदूर के जरिए पहलगाम आतंकी हमले का बदला ले लिया है. भारत की एयर स्ट्राइक के बाद पाकिस्तान के गीदड़भभकी देने वाले नेताओं के बयान आने शुरू हो गए हैं. इसी कड़ी में पाकिस्तान के विदेश मंत्री इशाक डार ने कहा कि अगर कोई और आक्रामक कदम उठाया जाता है तो हम ईंट का जवाब पत्थर से देंगे.

उन्होंने आगे कहा कि समय ही बताएगा कि वास्तविकता क्या है. इशाक डार ने कहा कि पाकिस्तान को कल रात करीब 10 बजे ही भारत से संभावित हमले की खुफिया जानकारी मिल गई थी. उन्होंने जोर देकर कहा कि मैं स्पष्ट करना चाहता हूं कि पाकिस्तान ने इस समय भी संयम बरता है. इशाक डार ने कहा कि मैंने कम से कम 26 अलग-अलग देशों के प्रमुखों से बात की है. उन सभी ने कहा है कि भारत और पाकिस्तान दोनों को मौजूदा तनाव को और आगे नहीं बढ़ने देना चाहिए. हमने उन्हें आश्वासन दिया है कि हम पूर्ण संयम बरतेंगे. पाकिस्तानी संसद में विदेश मंत्री इशाक डार ने कहा कि पहलगाम हमले के बाद भारत की कार्रवाई जिसमें कल रात किए गए हवाई हमले भी शामिल हैं वो एक कोरियोग्राफ़्ड एक्सरसाइज की तरह लग रही है.

इशाक डार ने कहा कि केवल उन भारतीय विमानों पर हमला करने के निर्देश थे जो पेलोड छोड़ते हैं. यही कारण है कि केवल 5 विमानों को ही मार गिराया गया, अगर निर्देश कुछ और होते तो करीब 10-12 विमानों को मार गिराया जाता. 'हम हर तरह से अपनी संप्रभुता और क्षेत्रीय अखंडता की रक्षा करेंगे।

2,467 करोड़ की ठगी में कूटे ग्रुप पर कार्रवाई

मुंबई। प्रवर्तन निदेशालय (ED) मुंबई ने धनराधा मल्टीस्टेट को-ऑपरेटिव क्रेडिट सोसाइटी लिमिटेड (DMCSL), सुरेश कूटे और अन्य के खिलाफ मनी लॉन्ड्रिंग रोकथाम अधिनियम (PMLA), 2002 के तहत बड़ी कार्रवाई करते हुए शुक्रवार (9 मई, 2025) को करीब 188.41 करोड़ रुपये की अचल और चल संपत्तियों को अस्थायी रूप से कुर्क किया है. इनमें महाराष्ट्र के बीड जिले में स्थित कूटे ग्रुप की कंपनियों की जमीनें, इमारतें और प्लांट-मशीनरी शामिल हैं. ईडी ने यह जांच मई से जुलाई 2024 के बीच महाराष्ट्र के विभिन्न पुलिस थानों में दर्ज एफआईआर के आधार पर शुरू की थी. आरोप है कि सुरेश कूटे और उनके साथियों ने DMCSL के माध्यम से हजारों निवेशकों को 12% से 14% तक के भारी ब्याज का लालच देकर निवेश कराया, लेकिन परिपक्वता पर उन्हें या तो आंशिक भुगतान किया गया या बिल्कुल भी नहीं किया गया.

भारत के एयर डिफेंस सिस्टम का दुनिया ने माना लोहा

नई दिल्ली। भारत में कई स्तर की एयर डिफेंस सिस्टम स्थापित है. इनके तहत नजदीक और दूर से आने वाली मिसाइलों को हवा में ही खत्म कर दिया जाता है. भारत का एयर डिफेंस कई लेयर में काम करता है. पहला- लॉन्ग रेंज इंटरसेप्शन यानी इंडियन बैलिस्टिक मिसाइल डिफेंस प्रोग्राम. दूसरा- इंटरमीडिएट इंटरसेप्शन यानी S-400 ट्रिम्फ एयर डिफेंस सिस्टम. तीसरा- शॉर्ट रेंज इंटरसेप्शन यानी आकाश एयर डिफेंस सिस्टम और उसके जैसे अन्य. चौथा- वेरी शॉर्ट रेंज इंटरसेप्शन यानी मैनपैड्स और एंटी-एयरक्राफ्ट गन्स. भारतीय बैलिस्टिक मिसाइल रक्षा कार्यक्रम भारत को बैलिस्टिक मिसाइल हमलों से बचाने के लिए एक बहुस्तरीय बैलिस्टिक मिसाइल रक्षा प्रणाली विकसित करने और तैनात करने की एक पहल है.

पाकिस्तान और चीन से बैलिस्टिक मिसाइल के खतरे को देखते हुए शुरू की गई यह एक दोहरी-स्तरीय प्रणाली है, जिसमें दो भूमि और समुद्र-आधारित इंटरसेप्टर मिसाइलें शामिल हैं. पृथ्वी वायु रक्षा (पीएडी) मिसाइल और कम ऊंचाई पर अवरोध के लिए उन्नत वायु रक्षा (एएडी) मिसाइल. दो-स्तरीय ढाल 5,000 किलोमीटर दूर से लॉन्च की गई किसी भी आने वाली मिसाइल को रोकने में सक्षम होनी चाहिए. इस प्रणाली में प्रारंभिक चेतावनी और ट्रैकिंग रडार के साथ-साथ कमांड और नियंत्रण चौकियों का एक ओवरलैपिंग नेटवर्क भी शामिल है. पृथ्वी वायु रक्षा (पीएडी) एक एंटी-बैलिस्टिक मिसाइल है जिसे वायुमंडल के बाहर से आने वाली बैलिस्टिक मिसाइलों को रोकने के लिए विकसित किया गया है. इसकी परिचालन सीमा 300 किमी -2000 किमी है. इसकी अधिकतम अवरोधन ऊंचाई 80 किमी है. इसे आने वाली बैलिस्टिक मिसाइलों को उनके बीच में ही रोकने के लिए डिज़ाइन किया गया है.

एडवांस्ड एयर डिफेंस (AAD) एक एंटी-बैलिस्टिक मिसाइल है, जिसे 30 किमी (19 मील) की ऊंचाई पर एंडो-एटमॉस्फियर में आने वाली बैलिस्टिक मिसाइलों को रोकने के लिए डिज़ाइन किया गया है. यह उन लक्ष्यों के लिए है जो किसी तरह PAD से होकर गुज़र जाते हैं. यह एक सेकेंड लेयर सेफ्टी सिस्टम है जो PAD की पूरक है. S-400 एक बार में एक साथ 72 मिसाइल छोड़ सकती है. इस एयर डिफेंस सिस्टम को कहीं मूव करना बहुत आसान है क्योंकि इसे 8X8 के ट्रक पर माउंट किया जा सकता है. माइनस 50 डिग्री से लेकर माइनस 70 डिग्री तक तापमान में काम करने में सक्षम इस मिसाइल को नष्ट कर पाना दुश्मन के लिए बहुत मुश्किल है. क्योंकि इसकी कोई फिक्स पोजिशन नहीं होती. इसलिए इसे आसानी से डिटेक्ट नहीं कर सकते.

इन भारतीय क्रिकेटर्स की सफलता के पीछे हैं उनकी सुपर मॉम का संघर्ष

मदर्स डे इस साल रविवार, 11 मई को मनाया जा रहा है. ये दिन मां के नाम है, जिसे भगवान का दर्जा दिया जाता है. मां सबसे बड़ी योद्धा होती है, जो हर परिस्थिति में अपने बच्चों को बेहतर जीवन देने के लिए संघर्ष करती है. आज इस ख़ास मौके पर हम आपको भारतीय क्रिकेटर्स के बारे में बता रहे हैं, जिनकी सफलता के पीछे कहीं ना कहीं उनकी सुपर मॉम रही हैं.

विराट कोहली की मां

दाएं हाथ के बल्लेबाज विराट कोहली दुनिया के सबसे फेमस क्रिकेटर्स में से एक हैं. कोहली ने छोटी उम्र में अपने पिता को खो दिया था, जिसके बाद उनकी माताजी सरोज कोहली ने आर्थिक परेशानियों के बावजूद कोहली के क्रिकेटर बनने के सपने को रुकने नहीं दिया. कोहली की माताजी की हिम्मत और ताकत ने कोहली के पिता की मृत्यु से पैदा हुए खालीपन के बावजूद परिवार को एक साथ रखा. कोहली की माताजी ने एक प्रकाशन से बात करते हुए कहा था, "पिता की मृत्यु के बाद से उनके बेटे कोहली बदल गए, वह हर मैच को गंभीरता से ले रहे थे. उन्हें बेंच पर बैठना पसंद नहीं था. मानों उस दिन के बाद से उनका जीवन पूरी तरह से क्रिकेट पर टिका हुआ था. कोहली ने अपने पिता और अपने माता के नाम का टैटू भी गुदवाया हुआ है.

मिताली राज की मां

कई वर्ल्ड रिकॉर्ड बना चुकी भारतीय महिला क्रिकेटर मिताली राज लाखों युवा लड़कियों के लिए आदर्श हैं. मिताली के माता-पिता ने उन्हें क्रिकेटर बनने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए कई त्याग किए. जब उन्हें पहली बार वर्ल्ड कप के लिए संभावित खिलाड़ियों में शामिल किया गया, तो उनके पिता दोराई राज ने दूसरे शहर में जाने से बचने के लिए अपना प्रमोशन छोड़ दिया था. उनकी मां लीला राज ने भी घर की देखभाल करने के लिए एक अपने करियर का त्याग कर दिया.एक इंटरव्यू में अपनी सुपरमॉम के बारे में बात करते हुए मिताली राज ने कहा था, "उन्होंने अपना बहुत सारा समय त्याग किया है. उन्होंने यह सुनिश्चित करने के लिए बहुत मेहनत की है कि मुझे समय पर खाना मिले. मैं उस तरह की बच्ची हूं जिसे आज भी अपनी मां की जरूरत होती है, इसलिए उन्होंने पीछे हटकर गृहिणी बनने का फैसला किया."

जसप्रीत बुमराह की मां

जब बुमराह के पिता का निधन हुआ था, तब उनकी उम्र सिर्फ 5 साल थी. एक इंटरव्यू में बुमराह ने बताया था कि इसके बाद मां को काम करना पड़ा. घर की परिस्थिति अच्छी थी जो चुनौतीपूर्ण बन गई थी. उन्होंने कहा था कि, "मेरी मां ने हमारे लिए जो कुछ किया है, हम उसका कर्ज कभी नहीं चुका पाएंगे." इस कठिन समय में उनकी मां ने सिखाया कि मुश्किल समय में धैर्य बनाए रखने का महत्त्व क्या होता है. तेज गेंदबाज ने माना कि उस दौरान सीखी गई बातें वह कभी नहीं भूलते.

रोहित शर्मा की मां

हाल ही में टेस्ट क्रिकेट से सन्यास लेने वाले रोहित शर्मा सबसे सफल कप्तानों में शुमार हैं. पहले मदर्स डे के मौके पर रोहित ने पोस्ट में लिखा था कि, "आप चाहें जीतें या अंतिम पायदान पर रहे, मां ही है जो हमेशा आपके साथ खड़ी रहेंगी. यह मां को स्पेशल बनाती है". आपको बता दें कि छोटी उम्र में रोहित अपने चाचा और दादा के साथ रहते थे, क्योंकि आर्थिक स्थिति बहुत अच्छी नहीं थी. इस दौरान आप समझ सकते हो कि उनकी माताजी ने अपने सपनों का कितना त्याग किया होगा ताकि उनका बेटा सफल हो सके.

दोबारा नहीं जाऊंगा पाकिस्तान, एयरपोर्ट पर रोने लगा क्रिकेटर

नई दिल्ली। भारत और पाकिस्तान, दोनों देशों ने सीजफायर पर सहमति जताई है. इससे पहले दोनों ओर से मिसाइलें दागी गईं और खूब बमबारी हुई, इस बीच पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड ने PSL 2025 को आगे स्थगित करने का एलान किया था. हाल ही में जब विदेशी क्रिकेटर पाकिस्तान से उड़ान भरने के बाद दुबई एयरपोर्ट पर लैंड हुए तो बांग्लादेशी खिलाड़ी रिशाद हुसैन ने अपना दर्द बयां किया. उन्होंने बताया कि कैसे उनके हमवतन क्रिकेटर नाहिद राणा कांपने लगे थे. उन्होंने एक ऐसे क्रिकेटर के बारे में भी बताया, जिसने कहा है कि वो कभी पाकिस्तानी धरती पर कदम नहीं रखेगा. क्रिकबज के मुताबिक दुबई एयरपोर्ट पर लैंड होने के बाद रिशाद हुसैन ने रिपोर्टर्स से बात करते हुए बताया, "सैम बिलिंग्स, डेरिल मिचेल, कुसल परेरा, डेविड वीजे और टॉम कर्रन समेत सभी खिलाड़ी डरे हुए थे. दुबई में लैंड होने के बाद डेरिल मिचेल ने मुझसे कहा कि वो कभी दोबारा पाकिस्तान नहीं जाएंगे, खासतौर पर ऐसे संकट के समय में तो कतई नहीं."

साई सुदर्शन ले सकते हैं इंग्लैंड सीरीज में रोहित शर्मा की जगह

नई दिल्ली। भारतीय क्रिकेट टीम का इंग्लैंड दौरा पास आ रहा है, लेकिन उससे पहले ही रोहित शर्मा ने टेस्ट क्रिकेट से रिटायरमेंट भारतीय क्रिकेट फैंस को झटका दे दिया था. चूंकि इंग्लैंड के खिलाफ सीरीज पास आ रही है, ऐसे में सबसे बड़ा सवाल है कि सलामी बल्लेबाज के तौर पर टीम में रोहित की जगह कौन लेगा? अब एक मीडिया रिपोर्ट में खुलासा हुआ है कि इंग्लैंड के खिलाफ सीरीज में साई सुदर्शन, बतौर ओपनर रोहित शर्मा की जगह ले सकते हैं.

न्यूज एजेंसी पीटीआई के मुताबिक भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (BCCI) में काफी लोग साई सुदर्शन से खासा प्रभावित हुए हैं. रोहित की रिटायरमेंट से पहले ही उन्हें रोहित शर्मा और यशस्वी जायसवाल के अलावा बैकअप ओपनर के रूप में टीम में शामिल किए जाने पर चर्चा चल रही थी.अब रोहित शर्मा टेस्ट क्रिकेट से रिटायर हो चुके हैं, इसलिए नए ओपनर की रेस में साई सुदर्शन फिलहाल सबसे आगे चल रहे हैं. यह भी गौर करने वाली बात है कि टीम में फिलहाल केएल राहुल समेत अन्य अनुभवी खिलाड़ी भी हैं, इसलिए सुदर्शन को मौका पाने के लिए इंतजार भी करना पड़ सकता है. साई सुदर्शन के टेस्ट डेब्यू पर चर्चा अब काफी समय से जारी है. पिछले साल उन्हें BCCI ने इंडिया ए टीम में जगह दी थी, इस मौके का फायदा उठाते हुए उन्होंने ऑस्ट्रेलिया ए के खिलाफ शतक लगाया था.

गजब की फॉर्म में हैं साई सुदर्शन

साई सुदर्शन रणजी ट्रॉफी 2024-25 का पूरा सीजन नहीं खेल पाए थे, लेकिन 3 मैचों में उन्होंने 76 के शानदार औसत से 304 रन बनाए थे, जिनमें एक शतक और एक फिफ्टी भी शामिल रही. सुदर्शन की जबरदस्त फॉर्म IPL 2025 में भी जारी है, जहां उन्होंने 11 मैचों में 509 रन बना लिए हैं.

'ऑपरेशन सिंदूर' ट्रेडमार्क की दौड़ से पीछे हटा रिलायंस

नई दिल्ली। मुकेश अंबानी की कंपनी रिलायंस इंडस्ट्रीज ने 'ऑपरेशन सिंदूर' को ट्रेडमार्क के रूप में रजिस्टर्ड कराने का अपना इरादा बदलते हुए आवेदन वापस ले लिया है. कंपनी ने इस पर सफाई देते हुए कहा है, ऑपरेशन सिंदूर भारतीय सेना की बहादुरी का प्रतीक और राष्ट्रीय चेतना का हिस्सा है. रिलायंस इंडस्ट्रीज की यूनिट जियो स्टूडियोज ने अपना ट्रेडमार्क आवेदन वापस ले लिया है, जिसे एक जूनियर अधिकारी ने अनजाने में दायर किया था. इसमें आगे कहा गया, रिलायंस इंडस्ट्रीज और उसके सभी स्टेकहोल्डर्स को 'ऑपरेशन सिंदूर' पर बहुत गर्व है, जो पहलगाम में पाकिस्तान की तरफ से कराए गए आतंकवादी हमले पर की गई जवाबी कार्रवाई थी. 'ऑपरेशन सिंदूर' आतंकवाद की बुराई के खिलाफ भारत की अडिग लड़ाई में हमारे बहादुर सशस्त्र बलों की गौरवपूर्ण उपलब्धि है. आतंकवाद के खिलाफ इस लड़ाई में रिलायंस हमारी सरकार और सशस्त्र बलों के पूर्ण समर्थन में खड़ा है.

स्मृति मंधाना ने शतक जड़कर रचा इतिहास

नई दिल्ली। ट्राई सीरीज के फाइनल में स्मृति मंधाना ने शतकीय पारी खेलकर इतिहास रच दिया। वह महिला वनडे में सर्वाधिक शतक जड़ने के मामले में तीसरी बल्लेबाज बन गई हैं। यही नहीं भारत ने पहले बल्लेबाजी करते हुए 342 रन बनाकर ऑस्ट्रेलिया के क्लब में एंट्री मार ली है। भारतीय टीम महिला वनडे के फाइनल में 340 से ज्यादा का स्कोर करने वाली दूसरी टीम बनी।

ट्राई नेशन सीरीज के फाइनल मुकाबले में भारतीय महिला क्रिकेट टीम की कप्तान हरमनप्रीत कौर ने श्रीलंका के खिलाफ टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करने का फैसला किया। सलामी बल्लेबाज प्रतिका रावल और स्मृति मंधाना ने शानदार अंदाज में भारतीय पारी का आगाज किया। दोनों के बीच पहले विकेट के लिए 70 रन की साझेदारी हुई। प्रतिका रावल 30 रन बनाकर पवेलियन लौट गईं। हालांकि, दूसरे छोर पर खड़ी स्मृति मंधाना ने 55 गेंद पर अपना अर्धशतक पूरा किया। उपकप्तान का बल्ला यहीं नहीं रूका और 31वें ओवर में 92 गेंद का सामना करते हुए शानदार शतक जड़ दिया।

यह उनके वनडे करियर का 11वां शतक है। इस तरह वह इंग्लैंड की टैमी ब्यूमोंट को पछाड़ते हुए महिला वनडे क्रिकेट के इतिहास में तीसरी सबसे ज्यादा शतक जड़ने वाली बल्लेबाज बन गईं। उनसे आगे अब सिर्फ ऑस्ट्रेलिया की मेग लैनिंग और न्यूजीलैंड की सूजी बेट्स हैं। मंधाना 102 गेंद पर 15 चौके और 2 छक्कों की मदद से 116 रन बनाकर आउट हुईं।

महिला वनडे क्रिकेट के इतिहास में सबसे ज्यादा शतक जड़ने वाली बल्लेबाजः-

मेग लैनिंग - 15

सूजी बेट्स - 13

स्मृति मंधाना - 11

टैमी ब्यूमोंट - 10

भारत से तनाव के बीच कंगाली की ओर बढ़ा रहा पाकिस्तान

नई दिल्ली। जम्मू कश्मीर के पहलगाम में आतंकी हमले के बाद भारत ने जिस तरह का एक्शन लिया है, उसके बाद पहले से ही तंगहाली की दौर से गुजर रही पाकस्तान की अर्थव्यवस्था और चरमरा गई है. इससे न सिर्फ तेजी के साथ उसके विदेशी मुद्रा भंडार में सेंध लग रहा है बल्कि जो कुछ कमाई हो भी रही थी, वो इस तनाव के बाद अब उसे उसका भारी नुकसान वहन करना पड़ रहा है. भारत की तरफ से जो कूटनीतिक एक्शन लिए गए थे, उससे बौखलाए पाकिस्तान ने अपना एयरस्पेस भारत के लिए बंद कर लिया. ऐसा करके उसने अपने ही पैरों पर कुल्हाड़ी मार ली है.नई दिल्ली के लिए एयरस्पेस बंद करने का पाकिस्तान का मकद भारत को आर्थिक चोट पहुंचाना था. लेकिन ऐसा करके उसने कमाई के तौर पर जो विदेशी मुद्रा आ रहा था, उसे भी गंवा दिया. साल 2022 में पाकिस्तान दिवालिया की कगार पर पहुंच गया था, लेकिन अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष से उस साल मार्च के महीने में मिले 2 बिलियन डॉलर के राहत पैकेज के बाद उसकी इकोनॉमी थोड़ी पटरी पर लौटी थी. लेकिन, वर्तमान स्थिति ने उसके सारे किए पर पानी फेरकर रख दिया है.

इस बात की तस्दीक वेल्थ मिल्स सिक्योरिटीज प्राइवेट लिमिटेड में इक्विटी स्ट्रेटजिस्ट क्रांति बथिनी भी कर रहे हैं. उनका कहना है कि पाकिस्तान की अर्थव्यवस्था तंगहाली के दौर से गुजर ही है. कई वैश्विक एजेंसियों से ऋण लेकर देश को चलाया जा रहा है. ऐसे में किसी भी तरह के भूराजनीतिक तनाव के बढ़ने से निश्चित तौर पर उसकी अर्थव्यवस्था पर गहरा दबाव पड़ेगा. मूडी ने भी कुछ इसी तरह के संकेत देते हुए कहा कि अगर किसी भी तरह से स्थिति बिगड़ती है तो इसका पाकिस्तान की इकोनॉमी पर बहुत ही बुरा असर होगा.

सुशासन त्यौहार पर मिले आवेदन पर समुचित कार्यवाही नहीं - कांग्रेस

95 प्रतिशत आवेदन सिर्फ विभागों को भेज कर निराकृत बताया जा रहा

रायपुर। सुशासन त्योहार के आवेदनो की कार्यवाही को सरकार अपने वेवसाईट मे सार्वजनिक करे कांग्रेस संचार प्रमुख सुशील आनंद शुक्ला ने दावा किया की सरकार को मिले 95 प्रतिशत आवेदनो को संबधित विभाग को भेज कर निराकृत होने का दावा किया जा रहा किसी भी आवेदन पर समुचित कार्यवाही नहीं की गयी साय सरकार का सुशासन त्योर प्लॉप साबित हुआ है।सुशासन त्योहार पर मिले आवेदनो सुशासन तिहार के पहले दूसरे चरण में आम जनता की समस्याओं से सम्बंधित लगभग 40 लाख आवेदन आए थे। इसके पहले मुख्यमंत्री जनदर्शन कार्यक्रम में 75,000 से अधिक आवेदन आया था। जिसका आज तक निराकरण नहीं हुआ है। फिर कहां है सुशासन? ऐसे में सुशासन तिहार के तीसरे चरण का कोई मतलब नहीं है। प्रदेश की जनता भाजपा सरकार के डेढ़ साल के कार्यकाल से हताश और परेशान हो गई है। किसान, मजदूर, व्यापारी, महिलाएं, छात्र, युवा, हर वर्ग हताश और परेशान है, अपनी समस्याओं को लेकर दफ्तरों के चक्कर लगा रहे हैं और जिम्मेदार तिहार मना रहे हैं।

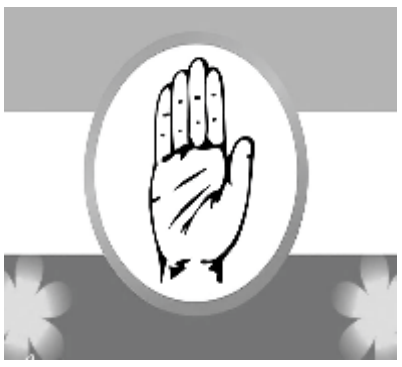

प्रदेश कांग्रेस संचार प्रमुख सुशील आनंद शुक्ला ने कहा कि भाजपा की सरकार बनने के बाद प्रदेश में सारी व्यवस्थाएं चरमरा गई है। अब तक 50 हजार करोड़ का कर्ज लिया जा चुका है। बिजली कटौती, पेयजल की समस्या, शिक्षकों की कमी, युवा रोजगार के लिए भटक रहे हैं, व्यापारी अनियमित जीएसटी से परेशान है। प्रदेश में मात्र 33 प्रतिशत स्टील उद्योग चल रहे हैं बांकी महंगी बिजली एवं प्रशासनिक अराजकता के चलते बंद हो गए है। अनियमित कर्मचारी, दिव्यांगजन वादाखिलाफी से त्रस्त है। नया 18 लाख प्रधानमंत्री आवास में से एक भी आवास स्वीकृत नहीं हो पाया है। 500 रू. में गैस सिलेंडर का वादा जुमला निकला। प्रधानमंत्री आवास को तोड़ा जा रहा है। अवैध शराब की बिक्री जोरों पर है, परिवहन विभाग की वसूली से ट्रांसपोर्टर वाहन चालक त्रस्त है। रोज नए नियम लागू करके जनता को परेशान किया जा रहा है। क्या यही सुशासन है?

कांग्रेस संचार प्रमुख सुशील आनंद शुक्ला ने कहा कि भाजपा की सरकार बनने के बाद सिर्फ भाजपा नेताओं के लिए सुशासन है कमीशन खोरी और भ्रष्टाचार जोरों पर है। कोई ऐसा विभाग नहीं बचा है जहां भाजपा के बिचौलिया न हो। डेढ़ साल में सड़क का मरम्मत नहीं हो पाया, स्कूलों के बिल्डिंग ध्वस्त हो रही है, अस्पतालों में दवाइयां नहीं है, जांच मशीने खराब पड़ी है, आयुष्मान का भुगतान रोके जाने से निजी अस्पताल इलाज में बहानेबाजी करके मरीजों को लौटा रहे है। मरीज इलाज के लिए भटक रहे, महतारी वंदन योजना में नाम काटा जा रहा है, रेडी टू ईट को महिला स्वास्थ्य समूह को देने की घोषणा की गई थी लेकिन वह सिर्फ घोषणा ही साबित हुई है, भाजपा सरकार पूरी तरह असफल साबित हो गई है।

सुशासन तिहार में मिले 40 लाख से अधिक आवेदनो का निराकरण करने का दावा खोखला

रायपुर। सुशासन तिहार में मिले 40 लाख से अधिक आवेदनों में से 39 लाख से अधिक आवेदनों का निराकरण होने के दावा पर सवाल उठाते हुए प्रदेश कांग्रेस के वरिष्ठ प्रवक्ता धनंजय सिंह ठाकुर ने कहा कि सरकार को स्पष्ट करना चाहिए जो आम जनता से 40 लाख से अधिक आवेदन प्राप्त हुए हैं जिसमें 10 लाख से अधिक आवेदन प्रधानमंत्री आवास की मांग, 2 लाख से अधिक आवेदन उज्जवला गैस योजना के लिए लगभग पौने दो लाख से अधिक आवेदन नया राशन कार्ड के लिए, 70000 से अधिक आवेदन सड़क पुल पुलिया निर्माण की मांग की एवं 25 लाख से अधिक आवेदन अन्य मांगों से जुड़ी हुई है। कि सरकार को स्पष्ट करना चाहिए की इतनी आवेदनों का निराकरण कैसे किये है? आवेदनों को निरस्त करना निराकरण कैसा हो गया?

प्रदेश कांग्रेस के वरिष्ठ प्रवक्ता धनंजय सिंह ठाकुर ने कहा कि सरकार दावा कर रही है कि 10 लाख प्रधानमंत्री आवास की मांग का आवेदन को निराकरण कर दिया गया है तो क्या प्रधानमंत्री आवास की स्वीकृति प्रदान कर दी है? या आवेदनों को भविष्य में पीएम आवास सूची बनने पर पात्र अपात्र आधार पर लाभ मिलने की जानकारी देकर सारे आवेदनों को निरस्त कर दिया गया है? भाजपा ने वादा किया था सरकार बनने पर 500 रु में रसोई गैस सिलेंडर दिया जाएगा जबकि प्रदेश में ढाई लाख से अधिक उज्जवला गैस योजना देने की मांग आई है तो सरकार ने क्या 500 रु में रसोई गैस सिलेंडर देने का वादा निभाते हुए नए कनेक्शन को मंजूरी दे दी है या केंद्र से पात्रता आधार पर मंजूरी मिलने की बात कह कर आवेदनों को निरस्त कर दिया है? 2 लाख से अधिक नया राशन कार्ड बनाने का मांग आया है तो क्या सभी को नया राशन कार्ड बना कर दे दिया गया है या पात्रता के अनुसार राशन कार्ड बनने की बात रहकर आवेदनों को निरस्त कर दिया गया है? प्रदेश कांग्रेस के वरिष्ठ प्रवक्ता धनंजय सिंह ठाकुर ने कहा कि सुशासन तिहार में प्राप्त आवेदनों को बजट के अनुरूप स्वीकृत करने की बात कही गई थी लेकिन जो दावा किया जा रहा है आवेदनों का निराकरण करने की उसकी बजट के कोई व्यवस्था नहीं है 10 लाख प्रधानमंत्री आवास एकमुश्त मिलना संभव ही नहीं है सरकार ने बजट में प्रधानमंत्री आवास के लिए कोई राशि अभी स्वीकृत नहीं की है पहले ही 18 लाख आवास स्वीकृत होने का दावा करके सरकार ने आवासहिनो के साथ भद्दा मजाक किया है।

18 लाख आवास पर श्वेत पत्र जारी करे भाजपा सरकार - दीपक बैज

रायपुर। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष दीपक बैज ने कहा कि साय सरकार 18 लाख आवास पर श्वेत पत्र जारी करे। भाजपा सरकार 18 लाख आवास स्वीकृत होने का झूठा दावा करती है, जबकि सच्चाई यह है कि साय सरकार गरीबो को आवास देने के नाम से धोखाधड़ी की है, जो भी आवास बने है और जो बन रहे है वो कांग्रेस सरकार के दौरान स्वीकृत हुए थे। साय सरकार खुद ही संख्या की घोषणा कर अपनी पीठ थपथपा रही है। कांग्रेस मांग करती है कि सरकार के दावों में सच्चाई है तो स्वीकृत आवास हीनों के नाम सार्वजनिक किया जाये।

प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष दीपक बैज ने कहा कि प्रधानमंत्री आवास के नाम पर भाजपा सरकार भ्रम फैला रही है। विधानसभा चुनाव में वादा किये थे 18 लाख आवासहीनों को आवास देंगे, अब दावा कर रहे है 8 लाख आवासहीनों के खाते में पहली किस्त डाली गयी है जबकि हकीकत यह है कि सरकार के पास अभी तक पात्र हितग्राहियों की न सूची है और न संख्या, जिन लोगों के खाते में पहली किस्त डालने का दावा कर रहे है उन सभी के खाते में पहली किश्त तो कांग्रेस की सरकार ने अक्टूबर में ही जारी कर दिया है। भाजपा सरकार में साहस है तो जिन लोगों के खाते में पैसा डालने का दावा कर रहे है उनकी सूची सार्वजनिक किया जाये।

प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष दीपक बैज ने कहा कि पीएम आवास योजना 2015 में लागू हुई तब केंद्र और राज्य दोनों जगह बीजेपी की सरकार थी। 2011 के जनगणना को आधार मानकर छत्तीसगढ़ के लिए कल 18 लाख आवास का लक्ष्य तय किया गया था। 2015 से 18 तक रमन सरकार के दौरान मात्र 237000 ग्रामीण पीएम आवास तथा 19000 शहरी पीएम आवास बने। 2018 से 23 तक भूपेश सरकार ने 10 लाख से अधिक पीएम आवास बनाएं। शेष लगभग 7 लाख आवास बनाने के लिए भूपेश बघेल सरकार ने विगत बजट में 3234 करोड़ का प्रावधान किया तथा 7 लाख आवासहीनो के लिये मकान बनाने के लिये पहली किश्त अक्टूबर में ही भूपेश सरकार ने डाल दिया था। साय सरकार बताये वह किन 18 लाख लोगों को आवास देने का दावा कर रही है।

अब नई बहुओं को भी मिलेगा महतारी वंदन का लाभ

शहर सत्ता/रायपुर। मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय के सुशासन में उन नई नवेली दुल्हनों को भी महतारी वंदन का लाभ मिलेगा जिनकी हाल ही में शादी हुई है। महतारी वंदन योजना के लाभ से अब छत्तीसगढ़ की नई बहुएं अछूती नहीं रहेंगी। मुख्यमंत्री साय ने स्पष्ट किया कि जिन नवविवाहित महिलाओं की पात्रता बनती है, उन्हें भी जल्द महतारी वंदन योजना का लाभ मिलेगा। इसका एलान मुख्यमंत्री श्री साय ने किया है। नई बहुओं को अब हर महीने 1000 रुपए शासन की महतारी वंदन योजना के तहत मिलेगा। ऐसी महिलाओं के लिए योजना के फॉर्म फिर से उपलब्ध कराए जाएंगे। इसका ऐलान खुद छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने किया है।गुरुवार को मुख्यमंत्री सुशासन तिहार के तीसरे चरण में मनेंद्रगढ़-चिरमिरी-भरतपुर जिले के ग्राम माथमौर पहुंचे। मुख्यमंत्री ने गांव के बीच स्थित महुआ के पेड़ के नीचे चौपाल लगाई और वहां मौजूद ग्रामीणों से सीधा संवाद किया। CM ने कहा- नई बहुओं को भी जल्द महतारी वंदन योजना का लाभ मिलेगा। वहीं ग्राम सरपंचों को पीएम आवास के लिए पात्र परिवारों की सूची बनाकर भेजने के लिए कहा।

युद्ध विराम की घोषणा अमेरिकी राष्ट्रपति के द्वारा किया जाना निराशा जनक - भूपेश बघेल

रायपुर। कांग्रेस के राष्ट्रीय महासचिव एवं पूर्व मुख्य मंत्री भूपेश बघेल ने बिहार दौरे से वापस आने के बाद मीडिया से विभिन्न मुद्दों पर चर्चा करते हुए कहा की युद्ध विराम की घोषणा अमेरिकी राष्ट्रपति के द्वारा किया जाना देश के लोगो के लिए निराशाजनक रहा उन्होंने कहा - दोनों सरकार ने सीजफायर का निर्णय लिया है, लेकिन ये अपमानजनक है घोषणा अमेरिका के राष्ट्रपति ने की, दोनों सरकार में से कोई घोषणा करते तो यह अलग बात थी, ट्रंप का निर्देश अपमानजनक है, 1971 में इंदिरा गांधी ने कहा था कोई भी तीसरा देश हस्तक्षेप नहीं करेगा, मध्यस्थता कोई भी कर सकता है लेकिन ट्रंप पंच बना है, कांग्रेस पार्टी ने विशेष सत्र बुलाने की मांग की है, देश जानना चाहता है कि ऐसी परिस्थितियों कैसे बनी, सरकार के फैसले पर कोई आपत्ति नहीं है युद्ध रुकना चाहिए, सरकार जो भी कदम उठाए कांग्रेस साथ है,जो निर्णय लेना है सरकार ले।

इंदिरा गांधी ने कहा था- कोई तीसरा देश हमारे मामले में हस्तक्षेप नहीं कर सकता

बांग्लादेशी घुसपैठियों को चिन्हांकित करने सरकार करेगी STF का गठन मामले पर पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने कहा - अभी तो अभियान चलाए थे , कितनों को निकाला गया..?? कितने को आईडेंटिफाई किया गया ? ये बताना चाहिए , पुलिस अधिकारियों ने रात-रात घर जाकर अभियान चलाया था उसका क्या हुआ ? जहां चुनाव होते हैं वहां पर बांग्लादेशी और पाकिस्तानी आ जाते हैं , बंगाल में चुनाव आने वाला है इसलिए अब बंगलादेशियों की बात होगी। *PM आवास पर कांग्रेस नेता मेरे सामने बैठ जाए: विजय शर्मा*के इस बयान पर पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने कहा- मंच,स्थान और समय तय कर लें, कांग्रेस के लोग चुनौती को स्वीकार करते हैं , पहले 1 लाख 30 हज़ार PM आवास के लिए दिया जाता था, अब 1 लाख 20 हज़ार कर दिया गया है, विधानसभा में ढाई लाख रुपए देने की माँग भी किया है।

कांग्रेस प्रवक्ता धनंजय सिंह ठाकुर ने शासन की कार्रवाई पर उठाया सवाल

बेमेतरा में पीएम आवास के नाम पर रिश्वत, कलेक्टर को निलंबित क्यों नहीं किया गया?

रायपुर। बेमेतरा जिला में पीएम आवास के हितग्राहियों से 10-10 हजार रु. रिश्वत लेने के मामले में बेमेतरा जिला कलेक्टर को निलंबित नहीं करने पर सवाल उठाते हुए प्रदेश कांग्रेस के वरिष्ठ प्रवक्ता धनंजय सिंह ठाकुर ने कहा कि मुख्यमंत्री विष्णु देव साय कोरबा जिला में सुशासन तिहार के दौरान पीएम आवास के नाम से किसी भी स्तर पर एक रुपया रिश्वत लेने पर कलेक्टर को जिम्मेदार मानते हुए निलंबित करने की चेतावनी दिये थे। लेकिन बेमेतरा जिला में प्रधानमंत्री आवास के हितग्राहियों से 10-10 हजार रुपया रिश्वत लिया गया।

जांच में दोषी पाये जाने पर तीन अधिकारी नीरा साहू, नारायण साहू, ईश्वरी साहू को सस्पेंड कर दिया गया। लेकिन मुख्यमंत्री के चेतावनी के अनुरूप बेमेतरा कलेक्टर को अभी तक निलंबित क्यों नहीं किया गया? क्या मुख्यमंत्री की चेतावनी सिर्फ हवा हवाई थी? क्या मुख्यमंत्री ने जनता से ताली बजवाने वाहवाही लूटने, मीडिया का हेडलाइन बनाने इस प्रकार बयान दिये थे? क्या उच्च अधिकारी मुख्यमंत्री की घोषणा को गंभीरता से नहीं लेते है? प्रदेश का मुखिया कोई घोषणा कर दे उसका अक्षरशः पालन होता है।

प्रदेश कांग्रेस के वरिष्ठ प्रवक्ता धनंजय सिंह ठाकुर ने कहा कि सुशासन तिहार ढोंग और ढकोसला साबित हो रहा जब मुख्यमंत्री के सार्वजनिक घोषणा पर अमल नहीं किया जा रहा है, ऐसे में जनता से प्राप्त आवेदन और मांग पत्रों का निराकरण असम्भव है। मुख्यमंत्री का सरकार पर कोई नियंत्रण नहीं है यह प्रदेश की जनता पहले से कह रही है और वह आज सच भी साबित हो रहे जब मुख्यमंत्री के घोषणा का पालन नहीं हो रहा है।

प्रदेश कांग्रेस के वरिष्ठ प्रवक्ता धनंजय सिंह ठाकुर ने कहा कि जीरो टॉलरेंस की बात करने वाली भाजपा की सरकार में भ्रष्टाचार शिष्टाचार बन चुका है। बिना चाय पानी लेनदेन के किसी भी विभाग में कोई काम नहीं होता है, जनता विभाग के चक्कर लगाकर हताश और परेशान हो चुकी है, यही वजह है कि सुशासन तिहार में 40 लाख से अधिक आवेदन आए हैं और अब तीसरे चरण में भी यह आवेदनों की संख्या बढ़कर एक करोड़ हो जाएगी तो अतिशयोक्ति नहीं है लेकिन उनका निराकरण होगा इसकी कोई गारंटी नहीं है असल में सरकार पूरी तरह से नख दंत विहीन है प्रशासनिक तंत्रों पर सरकार का नियंत्रण नहीं है सरकार कौन चला रहा है यह स्पष्ट नहीं है मुख्यमंत्री के मंत्रिमंडल में भारी मतभेद है खींचतान चल रहा है जिसके चलते आम जनता परेशान हो रही है।

ईमानदारी से काम करने वाली हमारी सरकार ने जनता के सामने रखा है अपना रिपोर्ट कार्ड - मुख्यमंत्री साय

शहर सत्ता/रायपुर। सुशासन तिहार के माध्यम से समस्याओं का समाधान करने आमजन के बीच पहुंच रही है विष्णुदेव सरकार। ईमानदारी से काम करने वाली सरकार ही जनता के सामने अपना रिपोर्ट कार्ड रख सकती है। हमने ये काम किया है। हमारी पारदर्शी सरकार सुशासन तिहार के माध्यम से समस्याओं का समाधान करने के लिए आपके बीच पहुंच रही है। मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय ने आज सुशासन तिहार के अंतर्गत गरियाबंद जिले की ग्राम पंचायत मड़ेली में आयोजित समाधान शिविर को संबोधित करते हुए यह बातें कही। श्री साय ने कहा कि सुशासन तिहार के तीसरे चरण के पांचवें दिन आज 10 वें जिले में आप सभी के बीच आया हूं ताकि योजनाओं के क्रियान्वयन की जमीनी हकीकत का पता चल सके। इस दौरान मुख्यमंत्री ने 75 करोड़ की लागत से ग्राम पंचायत मड़ेली में 132 केवी सब स्टेशन और विद्युत लाइन विस्तार तथा 147 करोड़ रुपए की लागत से राजिम से छुरा (बेलटुकरी होते हुए) 43 किमी सड़क चौड़ीकरण और पिपरछेड़ी जलाशय के अधूरे निर्माण को पूर्ण कराए जाने की बड़ी घोषणा की।

- मुख्यमंत्री ग्राम पंचायत मड़ेली में आयोजित समाधान शिविर में हुए शामिल
- ग्राम पंचायत मड़ेली में 75 करोड़ की लागत से 132 केवी सब स्टेशन की होगी स्थापना
- 147 करोड़ रुपए की लागत से राजिम-छुरा (बेलटुकरी होते हुए) 43 किमी सड़क का होगा चौड़ीकरण
- पिपरछेड़ी जलाशय के अधूरे कार्य को पूर्ण करने की मुख्यमंत्री ने दी मंजूरी, 45 साल बाद पूरी होगी परियोजना

नन्हें बच्चों का कराया अन्नप्राशन

समाधान शिविर में मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने दिव्यांगजनों को ट्राइसाइकिल और विभिन्न योजनाओं के अंतर्गत

हितग्राहियों को अन्य उपकरण और सामग्रियां वितरित किए। मुख्यमंत्री ने विभागीय स्टालों का दौरा कर अधिकारियों से आवेदनों के निराकरण की जानकारी ली और लंबित आवेदनों का निराकरण करने के निर्देश दिए। इस दौरान उन्होंने बच्चों को खीर खिलाकर अन्नप्राशन कराया और गर्भवती माताओं की गोद भराई की रस्म में शामिल हुए। इस अवसर पर विधायक रोहित साहू, छत्तीसगढ़ राज्य भंडार गृह निगम के अध्यक्ष श्री चंदूलाल साहू, जिला पंचायत गरियाबंद के अध्यक्ष श्री गौरीशंकर कश्यप, मुख्य सचिव अमिताभ जैन आदि उपस्थित थे।

पीएम आवास में लापरवाही, 11 सचिवों को कारण बताओ नोटिस

गरियाबंद। कलेक्टर बीएस उइके ने आज जिला पंचायत सभाकक्ष में प्रधानमंत्री आवास योजना की गहन समीक्षा की। उन्होंने ग्राम पंचायत सचिवों, रोजगार सहायकों एवं आवास मित्रों की बैठक लेकर जिले में पीएम आवास योजना के प्रगति की जानकारी ली। कलेक्टर ने जिले में प्रधानमंत्री आवास योजना अंतर्गत सभी कार्यों का गंभीरतापूर्वक क्रियान्वयन सुनिश्चित करने के निर्देश संबंधितों को दिए। उन्होंने पंचायत वार स्वीकृत कार्यों, प्रगतिरत, हितग्राहियों को प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय किश्त आबंटन एवं अप्रारंभ कार्यों की जानकारी ली। उन्होंने अप्रारंभ कार्यों को जल्द शुरू करने और जारी कार्यों को समय सीमा में पूर्ण करने के निर्देश दिए। कलेक्टर ने समीक्षा बैठक के दौरान पीएम आवास निर्माण कार्यों में उदासीनता, लापरवाही स्वेच्छाचारिता एवं अरुचि दिखाने वाले 11 ग्राम पंचायत सचिवों को मीटिंग के दौरान ही कारण बताओं नोटिस जारी किए। इनमें ग्राम पंचायत दांतबाय कला, कोसमबुड़ा, गुजरा, खरता, हाथबाय, बरबाहरा, मौहाभांठा, बेगरपाला, लोहारी, मरदाकला एवं खरहरी के पंचायत सचिव शामिल है। कलेक्टर ने धीमी प्रगति वाले पंचायतों के अधिकारी कर्मचारियों को सक्रिय होकर प्राथमिकता में कार्यों को पूर्ण करने के निर्देश दिए। साथ ही कार्यों का जिओ टैगिंग भी सुनिश्चित करने करने के भी निर्देश दिए। कलेक्टर ने कहा कि पीएम आवास योजना अंतर्गत सर्वे , जिओ टैगिंग, इंस्टॉलमेंट के नाम से अवैध लेन देन की शिकायत नहीं आनी चाहिए। अन्यथा संबंधितों पर कड़ी कार्रवाई की जाएगी। उन्होंने कहा कि हितग्राहियों को लाभान्वित करने कोई कोताही न बरते।

कृषि मंत्री बोले; आमजनों की समस्याओ का समाधान है सरकार की प्राथमिकता

शहर सत्ता/रायपुर। कृषि विकास एवं किसान कल्याण मंत्री रामविचार नेताम सुशासन तिहार संवाद से समाधान अभियान के तहत आज बलरामपुर जिले के रामचंद्रपुर विकासखंड के दोलंगी में आयोजित समाधान शिविर पहुंचे। शिविर में ग्राम बरवाही, सिलाजु, उचरूवा, चेरवाडीह, औरंगा, रेवतीपुर, आबादी तथा बिसुनपुर के ग्रामीणजन उपस्थित थे। मंत्री श्री नेताम ने कहा कि शासन-प्रशासन के प्रयासों से अब सभी के पास पक्का आवास है, जो अभी भी आवास से वंचित है उनका सर्वे जारी है, वे सर्वे में अपना नाम अवश्य जुड़वाएं। उन्होंने बताया कि जितने भी आवास स्वीकृत हैं, उन्हें प्रथम किस्त जारी की जा चुकी है और जैसे-जैसे पूर्णता की ओर बढ़ रहे हैं किस्त की राशि जारी की जा रही है।

मंत्री श्री नेताम ने बताया कि इस कलस्टर अंतर्गत 939 लोगों को पहली किस्त जारी की जा चुकी है, 474 हितग्राहियों को दूसरी और 181 हितग्राहियों का आवास पूरा हो चुका है। उन्होंने कहा कि शिविर के माध्यम से आवेदनों का समाधान करते हुए ग्रामीण जनों के लिए बेहतरी का कार्य किया जा रहा है। उन्होंने किसानों के उन्नयन पर जोर देते हुए किसानों को कृषि और

भारत-पाक तनाव का असर, सबसे बड़ा एंटी नक्सल ऑपरेशन स्थगित

शहर सत्ता/रायपुर। बीजापुर। छत्तीसगढ़ और तेलंगाना की सीमा पर कर्रेगुट्टा की पहाड़ को सुरक्षाबलों के जवानों ने पखपाड़ेभर तक घेरे रखा। इस बीच दो दर्जन से ज्यादा नक्सलियों को मार गिराया गया। लेकिन अब भारत-पाकिस्तान के बीच बने तनावपूर्ण माहौलन को देखते हुए कर्रेगुट्टा ऑपरेशन को फिलहाल अस्थाई रूप से बन्द कर दिया है। उल्लेखनीय पिछले सप्ताहभर से भारत-पाकिस्तान के बीच लगभग युद्ध जैसे हालात बने हुए हैं। आज ही सूचना आई है कि, पाकिस्तान अपनी फौज को सीमाई क्षेत्र में भेज रहा है। इसके चलते तेलंगाना-छत्तीसगढ़ की सीमा पर कर्रेगुट्टा ऑपरेशन पर अस्थायी रूप से रोक लगाई गई है।

सुरक्षाबलों को मुख्यालय में रिपोर्ट करने के निर्देश

CRPF समेत सुरक्षा बलों के सभी जवानों को वापस बुलाने की तैयारी शुरू कर दी गई है। सभी जवानों को मुख्यालय में रिपोर्ट करने का आदेश दिया गया है। उल्लेखनीय है कि, पिछले 18 दिनों से नक्सलियों के खिलाफ बीजापुर में चल रहा था देश का सबसे बड़ा नक्सल ऑपरेशन। अब तक इस ऑपरेशन में 26 नक्सलियों को मार गिराया गया था।

10वीं बोर्ड के नतीजों में प्रयास के बच्चों का शानदार प्रदर्शन, मुख्यमंत्री श्री साय और मंत्री श्री नेताम ने दी शुभकामनाएं

प्रयास के 13 बच्चों ने बनाया मेरिट में स्थान

शहर सत्ता/रायपुर। "कौन कहता है आसमां में सुराख नहीं हो सकता, एक पत्थर तो तबीयत से उछालो यारों" इस उक्ति को प्रयास आवासीय विद्यालय के बच्चों ने अपनी कठिन मेहनत और लगन से आज सच कर दिखाया है। माध्यमिक शिक्षा मण्डल द्वारा शैक्षणिक सत्र 2024-25 के 10वीं बोर्ड के घोषित परीक्षा परिणामों में प्रयास के 13 बच्चों का मेरिट में आना निश्चित ही एक बड़ी उपलब्धि है। 10वीं बोर्ड का ओवरऑल परीक्षा परिणाम शत् प्रतिशत रहा है, इसमें 98.35 प्रतिशत विद्यार्थियों ने प्रथम श्रेणी में परीक्षा उत्तीर्ण की है। इन विद्यार्थियों की सफलता पर मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय, मंत्री श्री रामविचार नेताम सहित प्रमुख सचिव श्री सोनमणि वोरा और आयुक्त डॉ. साराशं मित्तर ने शुभकामनाएं देते हुए उनके उज्जवल भविष्य की कामना की है।

खासकर तब, जबकि ये बच्चे बहुत ही सामान्य पृष्ठभूमि से आते हैं एवं अधिकतर नक्सल प्रभावित क्षेत्रों से संबंधित हैं। इन्होंने अपनी मेहनत, दृढ़ इच्छाशक्ति तथा विद्यालय के कड़े अनुशासन एवं अध्यापकों द्वारा दिए गए बेहतर मार्गदर्शन के बल पर बड़ी सफलता प्राप्त की है। अब इनके सपनों को मानों पखों की उड़ान मिल गई है इनमें किसी का लक्ष्य आईएएस बनने का है, तो कोई आईपीएस बनना चाहता है कोई डॉक्टर तो कोई इंजींनियर, तो कोई सीए बनना चाहता है। टॉप 10 में जगह बनाने वाले बच्चों का कहना है कि प्रयास विद्यालय में प्रवेश से पहले इनके मन में पढ़ाई के प्रति इतना जुनून नहीं था। यहां आने के बाद विद्यालय के अच्छे वातावरण, अच्छे शिक्षकों द्वारा दिए गए मार्गदर्शन एवं प्रोत्साहन तथा उनके द्वारा कड़ी मेहनत के बल पर उन्होंने यह सफलता प्राप्त की है।

मंत्री श्री नेताम ने इन विद्यार्थियों की सफलता पर कहा कि प्रयास विद्यालयों के अच्छे परीक्षा परिणाम, प्रतियोगी परीक्षाओं में सशक्त उम्मीदवारी के कारण अब इसकी गिनती प्रदेश के सबसे अच्छे विद्यालयों के रूप में होने लगी है। प्रयास विद्यालय में प्रवेश हेतू प्राक्चयन परीक्षा में बच्चों की लगातर बढ़ती संख्या इसका उदाहरण है। मंत्री ने कहा कि मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय ने प्रयास विद्यालय के सफलता को देखते हुए राजनांदगांव एवं बलरामपुर में एक-एक नए प्रयास आवासीय विद्यालय खोलने की स्वीकृति प्रदान की है।

10वीं के टॉप 10 में 13 विद्यार्थी

माध्यमिक शिक्षा मंडल द्वारा घोषित परीक्षा परिणामों में प्रयास के 13 विद्यार्थियों ने मेरिट में स्थान बनाया है। मेरिट में आने वाले छात्रों में सर्वाधिक छात्र प्रयास कन्या आवासीय विद्यालय, गुढ़ियारी, रायपुर से हैं। यहां की पांच छात्राओं - खुशबू सेन ने 8वां, महक चंद्रवंशी ने 9वां, अंजली साहू, नेहा चक्रधारी एवं काव्या वर्मा ने मेरिट में 10वां स्थान हासिल किया है। इसी प्रकार प्रयास संयुक्त आवासीय विद्यालय, कांकेर के जतिन नरेटी ने 5वां, डेविड गावडे ने 6वां, प्रयास, अंबिकापुर की खशबू बारिक एवं दिया चौहान 10वां-10वां, जबकि प्रयास, दुर्ग के बिटटू कुशवाहा ने 9वां, प्रयास, कोरबा की कु. डिम्पल ने 10वां, प्रयास, जशपुर की स्तुती पांडे ने 8वां एवं प्रयास, बालोद की भूमिका साहू ने 10वां, इस प्रकार कुल 13 विद्यार्थियों ने टॉप टेन में जगह बनाकर विद्यालय एवं प्रदेश का नाम रोशन किया है।

हुनर को शिनाख्त और कला को पहचान देता है सुंदरानी फिल्म्स

शहर सत्ता/रायपुर। पैंतीस साल पहले एक छोटे से सपने ने जन्म लिया – एक ऐसा सपना, जहाँ संगीत के प्रति जुनून को एक मुकाम तक पहुँचाना था। बचपन से ही संगीत में रुचि रखने वाले संस्थापक ने अपने सपने को साकार किया और एक स्टूडियो की स्थापना की, जो आज छत्तीसगढ़ फिल्मों और गीत-संगीत को पहचान देने वाले ऐतिहासिक स्टूडियो की शिनाख्त बन चुका है।

- **लक्खी सुंदरानी का एक छोटा सा सपना स्टूडियो से शुरू हुआ और 35 साल के सफर हुआ खुद मुख्त्यार**
- **पहली फिल्म थी छत्तीसगढ़ी फिल्म "जय माँ बम्लेश्वरी" आने वाली फिल्म "मैं राजा, तैं मोर रानी"**

यह स्टूडियो अपनी सबसे बड़ी खासियत के लिए जाना जाता है: यहाँ चार डिजिटल स्टूडियो हैं, जहाँ ऑडियो और वीडियो का निर्माण एक साथ होता है। तकनीक की बात करें तो यहाँ हाई-टेक मशीनों और सॉफ्टवेयर जैसे Adobe Premiere (वीडियो) और Neoendo, Cubase (ऑडियो) का इस्तेमाल होता है। स्टूडियो की 50 सदस्यीय टीम में ऑडियो और वीडियो के अलग-अलग डिपार्टमेंट हैं, जहाँ हर सदस्य अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

अब तक इस स्टूडियो ने करीब 20 फिल्मों पर काम किया है, जिनमें पहली फिल्म थी छत्तीसगढ़ी फिल्म "जय माँ बम्लेश्वरी"। आने वाली फिल्म "मैं राजा, तैं मोर रानी" को लेकर स्टूडियो में खास उत्साह है। स्टूडियो का सबसे हिट और यादगार प्रोजेक्ट रहा है "भारत का बच्चा बच्चा जय श्री राम बोलेगा", जिसने भारत ही नहीं, विदेशों में भी जबरदस्त लोकप्रियता हासिल की। इसके अलावा कई हिट गाने, फिल्में और विज्ञापन भी इस स्टूडियो की झोली में हैं। डबिंग और साउंड डिज़ाइन के लिए यहाँ सबसे जरूरी मानी जाती है प्रॉपर रिकॉर्डिंग, मिक्सिंग और मास्टरिंग। हालांकि, इस प्रक्रिया में सबसे बड़ी चुनौती होती है सब्र रखना। ओटीटी और डिजिटल प्रोजेक्ट्स के आने से काम में रफ्तार आई है और प्रक्रियाएँ आसान हुई हैं। स्टूडियो न सिर्फ फिल्मों पर, बल्कि एल्बम गानों, विज्ञापनों और कई तरह की रचनात्मक परियोजनाओं पर काम करता है। छत्तीसगढ़ी, भोजपुरी, मराठी जैसी कई भाषाओं में काम कर चुके इस स्टूडियो का अनुभव बेहद समृद्ध और शानदार रहा है। यही वजह है कि यह संस्थान अपने व्यवसाय को लगातार आगे बढ़ा रहा है।

संस्थापक का मानना है कि इस क्षेत्र में युवाओं के लिए अच्छे मौके हैं और अच्छी आमदनी भी। स्टूडियो हमेशा नए टैलेंट्स को प्रोत्साहित करता है और उन्हें उनकी रुचि और कौशल के अनुसार अवसर प्रदान करता है। अपनी सफलता का राज यह स्टूडियो मेहनत और किस्मत को मानता है। साथ ही, फिल्ममेकर्स और प्रोड्यूसर्स को सलाह देता है कि सही कलाकारों का चयन करना साउंड क्वालिटी और डबिंग के लिए सबसे अहम है।

एक अच्छी फिल्म एडिटिंग मतलब टाइट स्क्रीन प्ले और सही कट-साउंड इफेक्ट

मुंबई के एक फिल्म स्कूल से प्रारंभ और 15 साल के छत्तीसगढ़ी सिनेमा का सफर किये एडिटर गौरांग ने साझा किया अनुभव

शहर सत्ता/रायपुर। मुंबई के एक फिल्म स्कूल से 15 साल पहले करियर की शुरुआत करने वाले इस अनुभवी एडिटर ने अब तक डॉक्यूमेंट्री और कमर्शियल सिनेमा, दोनों में हाथ आजमाया है। एडिटिंग सॉफ्टवेयर में वह Final Cut Pro (FCP) को प्राथमिकता देते हैं क्योंकि इसे ऑपरेट करना आसान है और एक्सपोर्ट प्रक्रिया तेज़ होती है।

शहरसत्ता के कला समीक्षक पूरन किरी की प्रस्तुति

किसी भी प्रोजेक्ट पर काम शुरू करने से पहले वह स्क्रिप्ट को ध्यान से पढ़ते हैं और डायरेक्टर के साथ गहन चर्चा करते हैं। उनका मानना है कि डायरेक्टर का फीडबैक एडिटिंग को आसान बना देता है। उनके अनुसार हर फिल्म अपने साथ एक नया चैलेंज लेकर आती है, और वहीं असली मज़ा भी है। एक अच्छी एडिटिंग की सबसे बड़ी पहचान वह टाइट स्क्रीन प्ले और सही कट-साउंड इफेक्ट को मानते हैं। वे खुद साउंड मिक्सिंग और कलर करेक्शन नहीं करते, बल्कि मानते हैं कि हर काम के लिए एक्सपर्ट को ज़िम्मेदारी सौंपना ज़्यादा अच्छा रिज़ल्ट देता है।

उनकी पसंदीदा एडिटिंग जॉनर कोई एक नहीं सभी है। उनके लिए अच्छी कहानी और शानदार सिनेमैटोग्राफी ही असली मोटिवेशन है। अपनी स्किल्स को अपडेट रखने के लिए वह लगातार फिल्में देखते हैं और उनसे सीखते रहते हैं। स्टूडियो में फिल्म, म्यूजिक वीडियो, शॉर्ट फिल्म, डॉक्यूमेंट्री, कॉर्पोरेट वीडियो जैसी सभी एडिटिंग सर्विस दी जाती है, लेकिन फिलहाल उनका फोकस मुख्य रूप से फिल्मों पर है। छत्तीसगढ़ी सिनेमा के बदलावों पर बात करते हुए वह कहते हैं, "पहले गिने-चुने मेकर्स ही थे, इसलिए एक ही जैसी फिल्में बनती थीं। लेकिन नए मेकर्स के आने से सिनेमा धीरे-धीरे बदल रहा है। हमें रिस्क लेना होगा और दर्शकों को नई कहानियों और सब्जेक्ट्स की आदत डालनी होगी। हाल के 2-3 सालों में कुछ अच्छी फिल्मों का निर्माण हुआ है, जिनके ट्रेलर से लगता है कि बदलाव की कोशिश शुरू हो चुकी है।"

एडिटिंग के स्तर पर सुधार की ज़रूरत पर वह बताते हैं कि संसाधन तो हैं, लेकिन ज़रूरत है फिल्म स्कूलों की, जहां एडिटर्स को फिल्म एडिटिंग और दूसरी एडिटिंग में फर्क सिखाया जाए। इसके अलावा सेमिनार और ट्रेनिंग की भी सख्त जरूरत है। जब उनसे पूछा गया कि अगर उन्हें फुल क्रिएटिव फ्रीडम मिले तो वे क्या नया करना चाहेंगे, उन्होंने मुस्कुराते हुए कहा, "मैं छत्तीसगढ़ी फिल्मों में एडिटिंग को लेकर नए-नए एक्सपेरिमेंट करना चाहूंगा।

हाल ही में मेरी फिल्म गुइयाँ 2 में मैंने एडिटिंग में नयापन देने की कोशिश की थी, जो दर्शकों ने पसंद किया। आगे भी मैं कहानी और स्क्रीनप्ले को ध्यान में रखते हुए नए प्रयोग करने की इच्छा रखता हूँ, ताकि हमारा सिनेमा और आगे बढ़ सके।" यह सफर दिखाता है कि छत्तीसगढ़ी सिनेमा में बदलाव की लहर आ चुकी है, बस जरूरत है तो और ज्यादा जुनून और एक्सपेरिमेंट की।

रात-रात भर की मेहनत लाई रंग, नूतन ने ऐसे रचा इतिहास

शहर सत्ता/रायपुर। साल 2002 की बात है। एक नौजवान, जिसका दिल वीडियो एडिटिंग की दुनिया में बस चुका था, ने अपनी मंज़िल तय कर ली। हुआ यूँ कि एक दिन अपने दोस्त के साथ उसके दोस्त के घर पहुँचा, जहाँ शादी-ब्याह के वीडियो की एडिटिंग चल रही थी। स्क्रीन पर नाचते-गाते रंगीन दृश्य, और कंप्यूटर पर कट-पेस्ट करते हाथों ने उसे इतना मोहित किया कि उसने उसी पल तय कर लिया — मुझे वीडियो एडिटर बनना है!

रात-रात भर जागकर, बिना थके-रुके, उसने एडिटिंग सीखनी शुरू की। जल्द ही उसका नाम छत्तीसगढ़ी एल्बमों की दुनिया में चमकने लगा। गाने, एल्बम, लोकगीत — सब पर उसकी एडिटिंग की छाप दिखने लगी। इसी दौर में उसने एक न्यूज़ चैनल जॉइन किया, जहाँ अनुभव की नई दुनिया खुली। लेकिन असली मोड़ तब आया जब एक दिन चैनल से घर लौटते वक्त उसकी मुलाकात दिलीप बैस जी से हुई। एल्बम के समय के परिचित दिलीप जी ने पूछा, "क्या तुम मनोज वर्मा जी के स्वप्निल डिजिटल स्टूडियो जॉइन करोगे?"

- **आज इंडस्ट्रीज के सबसे बेस्ट वीडियो एडिटर और रिकॉर्डिस्ट में शुमार हुआ नूतन देवांगन का नाम**

वो प्रस्ताव उसके लिए किसी सपने के सच होने जैसा था। उसने तुरंत हाँ कहा और अगले ही दिन स्टूडियो का हिस्सा बन गया। स्टूडियो में उसने न जाने कितनी फिल्मों की एडिटिंग की, हर प्रोजेक्ट के साथ निखरता गया। फिर एक और चुनौती सामने आई — वहाँ के ऑडियो रिकॉर्डिस्ट को सरकारी नौकरी मिल गई, और पोस्ट खाली हो गई।

लेकिन उसने इस चुनौती को भी मौके में बदल दिया। खुद ही ऑडियो का काम सीख लिया और अब एक साथ दो भूमिकाओं में काम कर रहा है — एडिटर और रिकॉर्डिस्ट। आज ये कहानी सिर्फ उसके सफ़र की नहीं, बल्कि जुनून, मेहनत और सीखने की ललक की मिसाल बन चुकी है। यही जज़्बा है जो सपनों को हक़ीक़त में बदलता है।

45 साल बाद पूरी होगी पीपरछेड़ी सिंचाई परियोजना

मुख्यमंत्री ने दी ऐतिहासिक स्वीकृति, 10 से अधिक गांवों के 5,000 किसान होंगे लाभान्वित

रायपुर। गरियाबंद जिले के सुदूर वनांचल मड़ेली में आज एक ऐतिहासिक क्षण उस समय आया, जब मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय ने 45 वर्षों से अधूरी पड़ी पीपरछेड़ी सिंचाई परियोजना को पूरा करने की घोषणा की। यह घोषणा न केवल एक अधूरे वादे की पूर्णता है, बल्कि क्षेत्र के हजारों किसानों के सपनों की भी पुनर्स्थापना है।

1977 में प्रारंभ हुई इस योजना को घुनघुट्टी नाला पर बांध बनाकर सिंचाई सुविधा उपलब्ध कराने के उद्देश्य से शुरू किया गया था, लेकिन 1980 में वन अधिनियम लागू होने के कारण वन एवं पर्यावरणीय स्वीकृति न मिलने से कार्य अधर में लटक गया। इसके बाद की कई सरकारों ने इस ओर गंभीर पहल नहीं की, और किसानों की आशाएं धीरे-धीरे धुंधली पड़ती गईं।

परंतु मुख्यमंत्री श्री साय ने इस मुद्दे को प्राथमिकता में लिया। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में केंद्र सरकार ने पर्यावरणीय स्वीकृति देकर वर्षों पुरानी इस परियोजना को जीवनदान दिया। मुख्यमंत्री श्री साय ने सुशासन तिहार समाधान शिविर में इस बहुप्रतीक्षित स्वीकृति की घोषणा की, जिसे सुनकर उपस्थित जनसमूह ने हर्षोल्लास से वातावरण गुंजायमान कर दिया। मुख्यमंत्री श्री साय ने कहा कि यह सिर्फ एक परियोजना नहीं, बल्कि किसानों के संघर्ष, प्रतीक्षा और उम्मीद की जीत है। यह सुशासन तिहार का असली अर्थ है – लोगों के जीवन में वास्तविक बदलाव लाना। इस निर्णय से न केवल क्षेत्र के किसानों को स्थायी सिंचाई सुविधा मिलेगी, बल्कि फसल उत्पादन और किसानों की आर्थिक स्थिति में भी व्यापक सुधार होगा, जिससे क्षेत्र में समग्र विकास की नई धारा बहेगी।

मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने बलदाकछार में दी कई सौगातें

प्रदेशव्यापी सुशासन तिहार अंतर्गत मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय ने बलौदाबाजार भाटापारा जिले के ग्राम बलदाकछार में आयोजित चौपाल में ग्रामीणों से शासकीय योजनाओं के क्रियान्वयन के संबंध में जानकारी ली। इस दौरान मुख्यमंत्री श्री साय ने ग्राम बलदाकछार में महानदी के बहाव से नदी के तट को कटाव से बचाने हेतु तटबंध निर्माण एवं गांव के चौक में हाई मास्ट लाइट लगाने की घोषणा की। इसके साथ ही ग्रामीणों की मांग पर बलदाकछार में उपस्वास्थ्य केंद्र खोलने, महानदी में एनीकट निर्माण हेतु जांच कराने, नवापारा अभयारण्य में जंगल सफारी के लिए सफारी वाहन चलाने हेतु ड्राइवरों को प्रशिक्षण देकर रोजगार प्रदान करने की बात कही। मुख्यमंत्री श्री साय ने कहा कि लोगों की समस्याओं और सरकारी योजनाओं की पहुँच आमजन तक हो रही है या नहीं—इसी को जानने के लिए सुशासन तिहार के तहत अधिकारीगण आपके घर तक पहुँच रहे हैं। प्रधानमंत्री आवास योजना (ग्रामीण) अंतर्गत पात्र हितग्राहियों को आवास का लाभ देने हेतु आवास 2.0 का सर्वे जारी है। इसमें सभी पात्र हितग्राही अपना पंजीयन अवश्य कराएं। अब सरकार ने यह भी निर्णय लिया है कि 5 एकड़ असिंचित या 2.5 एकड़ सिंचित भूमि के मालिक तथा मोटरसाइकिल रखने वाला व्यक्ति भी आवास योजना के लिए पात्र होगा। महतारी वंदन योजना के लिए नवीन पंजीयन हेतु पुनः पोर्टल प्रारंभ किया जाएगा। इस अवसर पर मुख्य सचिव श्री अमिताभ जैन, मुख्यमंत्री के प्रमुख सचिव श्री सुबोध कुमार सिंह, सचिव श्री बसवराजू एस. सहित अन्य अधिकारीगण उपस्थित थे।

रूपलाल और राजेश की नई शुरुआत

'सुशासन तिहार' के अंतर्गत आयोजित समाधान शिविर में खैरागढ़ विकासखण्ड के ग्राम खपरी तेली और खपरी सिंदर के दो मेहनती ग्रामीणों, रूपलाल निषाद और राजेश निषाद, के जीवन को नई दिशा दी है। इन दोनों मछुआरों ने मछली पालन के लिए शासन से सहायता प्राप्त करने हेतु समाधान शिविर में आवेदन प्रस्तुत किया। उनकी आवश्यकताओं को गंभीरता से लेते हुए प्रशासन ने ग्राम मुढ़ीपार में आयोजित शिविर में उन्हें तुरंत महाजाल (फिशिंग नेट) प्रदान किया। पहले ये दोनों पारंपरिक और सीमित साधनों से मछली पकड़ते थे, जिससे उन्हें मेहनत के अनुपात में बहुत कम आय होती थी। लेकिन अब महाजाल की सहायता से वे अधिक मात्रा में मछली पकड़ने में सक्षम हो सकेंगे। इससे उनकी आमदनी में वृद्धि होगी। और जीवन में आर्थिक स्थिरता आएगी। रूप लाल और राजेश ने शासन व प्रशासन का आभार व्यक्त करते हुए कहा यह सहायता हमारे लिए एक नई उम्मीद लेकर आई है। अब हमें अपने परिवार के भविष्य को लेकर चिंता नहीं है। मत्स्य पालन विभाग के सहायक संचालक श्री प्रदीप भोले ने बताया कि शासन की प्रतिबद्धता है कि ग्रामीणों को उनकी जरूरत के अनुसार योजनाओं का लाभ सीधे और त्वरित रूप से मिले। सुशासन तिहार इसका सशक्त माध्यम बन रहा है।

गंगोत्री बाई को मिला पक्के आवास का उपहार

बिलासपुर जिले के लिमतरा में आयोजित समाधान शिविर के दौरान केंद्रीय आवास एवं शहरी विकास मंत्री श्री तोखन साहू द्वारा गंगोत्री बाई को उनके नवनिर्मित पक्के आवास की चाबी सौंपते ही उनका परिवार हर्षोल्लास से झूम उठा। गंगोत्री बाई ने बताया कि वे कई वर्षों से अपने मायके लिमतरा में निवास कर रही थीं। जीवनयापन के लिए वे एवं उनके पति रोजी-मजदूरी कर अपने बच्चों का पालन-पोषण करते रहे। कच्चे घर में रहने की मजबूरी के कारण हर मौसम में उन्हें कठिनाइयों का सामना करना पड़ता था। आर्थिक स्थिति कमजोर होने के कारण पक्का घर बनाना उनके लिए असंभव प्रतीत होता था। ऐसे में प्रधानमंत्री आवास योजना के अंतर्गत उन्हें नया पक्का घर मिलना उनके लिए किसी वरदान से कम नहीं है। उन्हें महतारी वंदन योजना का भी लाभ प्राप्त हो रहा है, जिससे वे अपनी दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति कर पा रही हैं। साथ ही उनके श्रम कार्ड के माध्यम से उनकी 12वीं कक्षा में अध्ययनरत पुत्री को शासन द्वारा 20 हजार की शैक्षणिक सहायता भी मिलेगी।

रीना यादव और सीमा बघेल को मिला नया राशनकार्ड

बिलासपुर नगर निगम क्षेत्र के जोन क्रमांक 2 की निवासी श्रीमती रानी यादव ने प्राथमिकता श्रेणी के अंतर्गत राशनकार्ड हेतु आवेदन किया था। जांच में पाया गया कि वह असंगठित क्षेत्र में श्रमिक के रूप में कार्यरत हैं और उनका नाम श्रमिक कार्ड में मजदूर (रेजा, कूली) के रूप में दर्ज है। पात्रता की पुष्टि के बाद उन्हें नवीन प्राथमिकता राशनकार्ड प्रदान किया गया। इसी तरह श्रीमती सीमा बघेल ने सामान्य राशनकार्ड के लिए आवेदन दिया था, जांच में यह पाया गया कि वह संयुक्त एवं सामान्य परिवार से संबंध रखती हैं, और उनके पति श्री सतीश बघेल भारतीय रेलवे में लोको पायलट के रूप में कार्यरत हैं। समाधान शिविर में आवश्यक दस्तावेजों की पुष्टि के बाद उन्हें नवीन सामान्य राशनकार्ड जारी किया गया। दोनों हितग्राहियों ने राज्य शासन की सुशासन तिहार की प्रशंसा करते हुए कहा कि इस योजना के माध्यम से उन्हें बिना किसी कठिनाई के सरकारी सुविधा का लाभ प्राप्त हुआ है। रानी यादव ने बताया कि पहले कई बार प्रयास के बावजूद राशनकार्ड नहीं बन सका था, लेकिन इस योजना ने उनके परिवार की बड़ी समस्या का समाधान कर दिया।

हिमांशी को मिली शैक्षणिक सहायता

राज्य शासन द्वारा श्रमिक परिवारों की बालिकाओं के शैक्षणिक और सामाजिक सशक्तिकरण के उद्देश्य से संचालित मुख्यमंत्री नोनी सशक्तिकरण सहायता योजना जरूरतमंद परिवारों के लिए संबल का कार्य कर रही है। इस योजना की सकारात्मक झलक राजनांदगांव विकासखंड के नगर पंचायत घुमका में आयोजित समाधान शिविर के दौरान देखने को मिली, जब ग्राम बरबसपुर निवासी हिमांशी वर्मा को योजना के अंतर्गत 20 हजार रूपए की एकमुश्त सहायता राशि प्राप्त हुई। हिमांशी वर्मा की माता श्रीमती धनेश्वरी वर्मा श्रम कार्यों से जुड़ी हुई हैं एवं श्रम विभाग में पंजीकृत निर्माण श्रमिक हैं। हिमांशी ने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए बताया कि प्राप्त सहायता राशि का उपयोग वह अपनी पढ़ाई के लिए करेंगी। उन्होंने बताया कि वे आगे एलएलबी की पढ़ाई कर अधिवक्ता बनना चाहती हैं और यह सहायता उनके लिए शिक्षा की दिशा में एक महत्वपूर्ण सहारा सिद्ध होगी। उन्होंने मुख्यमंत्री के प्रति धन्यवाद ज्ञापित करते हुए कहा कि राज्य शासन द्वारा चलाई जा रही योजनाएं गरीब और श्रमिक वर्ग के हित में उल्लेखनीय कार्य कर रही हैं।

संसाधन, बजट, स्टाफ के अभाव में सिर्फ सवा 2 घंटे का ताजा प्रसारण

रायपुर दूरदर्शन केंद्र का हाल बेहाल...

पुरन किरी/रायपुर

तत्कालीन मध्य प्रदेश और वर्तमान छत्तीसगढ़ राज्य का पहला दूरदर्शन केंद्र रायपुर में स्थापित हुआ था। अपनी स्थापना के तकरीबन 48 साल बाद भी रायपुर का दूरदर्शन केंद्र ताजा तरीन कार्यक्रमों के प्रसारण ही नहीं प्रोडक्शन में भी मुफलिस बना हुआ है। इसकी मुफलिसी की वजह है दिल्ली में बैठे आला अधिकारी और उदासीन सुचना प्रसारण मंत्रालय। लगातार अपर्याप्त बजट, कमतर संसाधन, पुरानी तकनीक के अलावा स्टाफ की गंभीर समस्या से दूरदर्शन रायपुर महाराष्ट्र, असम, तेलंगाना और अन्य क्षेत्रीय प्रसारण केंद्रों से पिछड़ता जा रहा है। छत्तीसगढ़िया फ़िल्मी गानों, दर्शकों को पसंद क्षेत्रीय भाषा की फ़िल्में, स्थानीय कलाकारों, लोक-संगीत, परिधान और संस्कृति पर आधारित कार्यक्रमों के प्रसारण की जगह हिंदी और सुगम संगीत को केंद्र तरजीह दे रहा है। विडंबना यह कि सबसे आसान छत्तीसगढ़ी न्यूज तक का प्रसारण या प्रोग्राम रायपुर दूरदर्शन केंद्र नहीं कर पा रहा।

- **स्थानीय बोली, भाषा और कार्यक्रमों के प्रसारण का अकाल**
- **2012 में 24 घंटे फ्रेश प्रोग्राम के प्रसारण का हुआ था एलान**
- **छत्तीसगढ़ के प्रसारण केंद्र में स्थानीय भाषा में न्यूज नहीं**

शहर सत्ता। छत्तीसगढ़ दूरदर्शन केंद्र में अब 24 घंटे का प्रसारण (24-hour slot) शुरू हुए अरसा गुजर गया है। पहले यह साढ़े तीन घंटे के स्लॉट में सीमित था। इस बदलाव की शुरुआत वर्ष 2012 में हुई। जब खासी मांग के बाद क्षेत्रीय प्रसारण को ज्यादा समय देने का निर्णय लिया गया। फिलहाल, छत्तीसगढ़ दूरदर्शन में लगभग 5–6 प्रमुख कार्यक्रम ही नियमित रूप से चल रहे हैं। दिनभर के शेड्यूल में 11 तक के स्लॉट गिने जाते हैं, लेकिन इनमें से कुछ स्लॉट खाली रह जाते हैं। अनुमानित रूप से, पूरे 24 घंटे में अगर एक कार्यक्रम औसतन आधे घंटे का माना जाए, तो लगभग 48 कार्यक्रम दिखाए जा सकते हैं। विडम्बना यह है कि अभी चार-पांच कार्यक्रमों को ही रोटेशन में दिखाया जा रहा है। दूरदर्शन केंद्र में दिन के समय (3 से शाम 7 बजे तक) मुख्य रूप से स्पॉन्सरशिप या केंद्र से आए हुए दिल्ली-निर्देशित कार्यक्रम चलते हैं। रात 11 बजे के बाद स्थानीय लोकसंगीत, छत्तीसगढ़ी नाचा, पंथी, करमा जैसे परंपरागत फोक प्रोग्राम शामिल किए जाते हैं। हिंदी सुगम संगीत, हिंदी न्यूज की बजाये छत्तीसगढ़ी में प्रस्तुति नहीं के बराबर है। रायपुर केंद्र के आला अधिकारीयों का कहना है कि छत्तीसगढ़ की बोली विविध और क्षेत्रीय रूप से बदलती है।

सरगुझिया, बस्तरिया, ओड़िया में उलझा केंद्र

एक प्रमुख चुनौती यह है कि छत्तीसगढ़ की बोली विविध और क्षेत्रीय रूप से बदलती है। अंबिकापुर और जगदलपुर जैसे इलाकों में छत्तीसगढ़ी का स्वरूप भिन्न होता हैं। इसलिए प्रसारण में शुद्ध छत्तीसगढ़ी भाषा की जगह हिंदी मिश्रित छत्तीसगढ़ी का प्रयोग किया जाता है।

"हमारा लक्ष्य है कि लोकसंगीत, पारंपरिक नृत्य, और छत्तीसगढ़ की संस्कृति को ज्यादा समय और जगह दी जाए। इसके लिए हमें प्रोडक्शन और रिकॉर्डिंग दोनों स्तर पर क्षेत्रीय बोली के मुताबिक काम करना होता है, ताकि स्थानीय लोग भी जुड़ाव महसूस कर सकें। दूरदर्शन रायपुर के अलावा जगदलपुर और अंबिकापुर के केंद्रों में भी रिकॉर्डिंग होती है, जहां स्थानीय भाषा और विषयवस्तु को ध्यान में रखकर कार्यक्रम तैयार किए जाते हैं। हालांकि, सीमित संसाधनों और दर्शकों की विविधता को ध्यान में रखते हुए, चैनल को अपनी प्रस्तुति में हिंदी का सहारा लेना पड़ता है, ताकि छत्तीसगढ़ के ग्रामीण इलाकों तक भी प्रभावी संदेश पहुंच सके। बड़ी समस्या यह भी है कि छत्तीसगढ़ी फिल्मों और गानों के राइट्स अक्सर मुंबई या दिल्ली के प्रोडक्शन हाउसेज़ के पास होते हैं। "अगर हम अपने रिजनल कंटेंट को दिखाना भी चाहें, तो हमें अप्रूवल्स और कॉपीराइट की लंबी प्रक्रिया में उलझना पड़ता है।"

प्रदीप कुमार श्रीवास्तव, सहा.निदेशक कार्यक्रम, रायपुर दूरदर्शन केंद्र

बड़े सपनों के लिए केंद्र की छोटी जेब

डीडी छत्तीसगढ़ के अधिकारियों ने बातचीत में साफ कहा कि उनका सालाना बजट महज ₹50 लाख है। इस रकम में स्टूडियो का रखरखाव, प्रोग्राम्स का निर्माण, डॉक्यूमेंट्री, लोकसंगीत शो, कृषि आधारित कार्यक्रम, सब कुछ शामिल करना होता है। तुलना करें, तो तेलंगाना जैसे राज्यों में डीडी स्टूडियो अत्याधुनिक सुविधाओं से लैस हैं। जबकि छत्तीसगढ़, जहां दूरदर्शन केंद्र 1977 में स्थापित हुआ और वर्ष 2000 में राज्य बना, अब तक बुनियादी संसाधनों के लिए जूझ रहा है।

प्रसारण स्लॉट, खाली समय, खाली वादे

24 घंटे के प्रसारण में व्यावहारिक रूप से केवल 5–6 कार्यक्रम ही नियमित रोटेशन में चलते हैं। तकनीकी रूप से हर आधे घंटे में नया शो दिखाया जा सकता है, यानी 48 स्लॉट, लेकिन हकीकत में कई स्लॉट खाली या दिल्ली से भेजे गए सेंट्रल प्रोग्राम्स से भर दिए जाते हैं। लोकसंगीत, पंथी, करमा जैसे छत्तीसगढ़ी रंगों को रात 11 बजे के बाद स्लॉट मिलता है, यानी prime time तक ये संस्कृति पहुँच ही नहीं पाती।

स्टाफ की किल्लत, आधे लोग, दोगुना काम

एक वरिष्ठ अधिकारी के मुताबिक "2002 में 11 कैमरामैन थे, अब स्टाफ आधा रह गया है। पहले प्रोग्राम हेड डायरेक्टर रैंक का होता था। अब चार रैंक नीचे वाले को हेड बना दिया जाता है।" इससे प्रोडक्शन क्वालिटी पर असर पड़ता है और टीम का मनोबल भी गिरता है।

दूरदर्शन का रायपुर केंद्र तभी लोकप्रिय और स्थानीय निर्माताओं के लिए उपयोगी होगा, जब यहां भी कमिशंड प्रोग्राम तथा छत्तीसगढ़ी फिल्मों का प्रसारण प्रारंभ होगा। साथ ही प्रसार भारती को अपने कुछ दकियानूसी नियम में बदलाव करना पड़ेगा। केंद्र को अब यहां के आकाशवाणी एवं दूरदर्शन में स्थानीय फिल्में,एवं उनके गाने रॉयल्टी पर चलाने का अधिकार दे देना चाहिए। अफ़सोस है कि यहां से वीसी शुक्ला,एवं रमेश बेस जैसे केंद्रीय सूचना प्रसारण मंत्री के रहते हुए भी छेत्र का कुछ ज्यादा भला नहीं हो पाया। अब जबकि छत्तीसगढ़ी फिल्में और उनके गाने भी घर घर में पसंद किए जा रहे है, तो उनका प्रसारण भी किया जाना चाहिए।

संतोष जैन, अध्यक्ष छग. सिने टेलीविजन प्रोड्यूसर एसो.

छत्तीसगढ़ी फिल्म एसोसियेशन लगातार प्रयासरत रहा है की छत्तीसगढ़ी फिल्मों और गीत-संगीत को प्रसार भारती के मंच से जगह मिले। पहले यह सारी गतिविधियाँ स्पॉन्सर्ड प्रोग्राम्स के तहत चलती थीं, जहाँ हमें स्लॉट लेकर अपने गानों और फिल्मों का प्रचार-प्रसार करना पड़ता था। उस समय यह व्यवस्था सीमित थी, लेकिन अब जब दूरदर्शन 24 घंटे का चैनल बन चुका है और आकाशवाणी की पहुँच भी काफी बढ़ गई है, ऐसे में उम्मीद की जा रही है कि आने वाले समय में छत्तीसगढ़ी फिल्मों और गीतों का नियमित प्रसारण इन सरकारी माध्यमों से सुनिश्चित होगा। हमें मिलकर यह सुनिश्चित करना चाहिए कि हमारी भाषा, हमारी फिल्में, और हमारा संगीत अधिक से अधिक दर्शकों और श्रोताओं तक पहुँचे, ताकि हमारी संस्कृति की जड़ें और भी गहरी हो सकें और आने वाली पीढ़ियों तक सजीव रह सकें।

मनोज वर्मा, सचिव, छग. सिने टेलीविजन प्रोड्यूसर एसो.

स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक श्री सुकांत राजपूत द्वारा ए.आर. प्रिंटर्स, निरंकारी फर्नीचर के पीछे, पंडरी रायपुर से मुद्रित एवं शहरसत्ता, एस-15 प्रियदर्शिनी नगर, सेक्टर 1, मातृ-पितृ छाया अपार्टमेंट, रायपुर (छ.ग.), मोबाईल नं. 98271-81979, फोन नं. 0771-22683361, संपादक - सुकांत राजपूत (पीआरबी एक्ट के तहत समाचार के लिए जिम्मेदार), महाप्रबंधक - प्रदीप चंद्रवंशी।